(बिस्मिल्लाह अर रहमान निररहीम)

हार्ट–ब्रेन

HEART-BRAIN

द्वारा

डा0 शाह शाहिद रशीद साबरी

9759192020
गुलशने तनवीर अम्बैहटा पीर
सहारनपुर – उत्तर प्रदेश
पिनकोड–247340

नाम किताब	:	हार्ट–ब्रेन
द्वारा	:	डा0 शाह शाहिद रशीद साबरी
पेज	:	104
सन्	:	1 जनवरी 2023
क़ीमत	:	सौ रूपये
कम्प्यूटर किताबत	:	पंकज कुमार (8958257434)

(बिस्मिल्लाह अर रहमान निररहीम)

Dedication–इन्तसाब

उन सब लोगों की ख़िदमत में जो कुरान शरीफ से मुहब्बत और सदाक़त पर यक़ीन रखते है और इसे ग़ौर, फिकर व समझ कर पढते है।

डा0 शाह शाहिद रशीद साबरी

विषय सूची

''औलाद की तरबियत''

जब घर में बच्चा पैदा होता है, तो यह समझये कि आपका निगरॉ पैदा हो गया। बच्चा मॉ बाप की सुनता कम है, देखता ज्यादा है।

बच्चे की तरबियत से पहले मॉ बाप की तरबियत शुरू हो जाती है। बच्चा जो मॉ–बाप को करते हुए देखता है वही करता है। **Children always copy their parents** इसलिए बच्चे की तरबियत से पहले मॉ–बाप का तरबियत याफता होना जरूरी है। छः, सात साल की उमर तक बच्चा बादशाह होता है। बारह साल तक बाप बादशाह होता है और अठठारह साल तक बच्चा मॉ–बाप का दोस्त होता है। सबसे पहले मॉ–बाप को सच्चाई, ईमानदारी, दयानतदारी, इबादतगुजारी, पाकी, सफाई और नफासत इख्तयार करनी चाहिए। बच्चा मॉ–बाप का आईना होता है। घर में प्यार मुहब्बत और खुशअखलाकी का माहौल पैदा करना चाहिए। अगर मॉ–बाप में आपसी इखतलाफे राय है तो उसको बच्चों के सामने हल ना करें। घर में दीनी माहौल पैदा करे। एक दूसरे के साथ तमीज से बात करें। तू और तुम की बजाय आप का इस्तेमाल करें। बच्चों को भी

प्यार से बुलाये और बात करें। बच्चों के सर पर हाथ फेरें। कोई अच्छा काम करने पर बच्चे की तारीफ करें। बच्चा जब बहुत छोटा होता है, तब भी वह प्यार और गुस्से की निगाह और आवाज की तमीज कर लेता है। कभी–कभी बच्चों के साथ खेलें, उनको वक्त दे। हुजूर भी अपने नवासों के साथ खेला करते थे।

बच्चों को सबसे पहले कलमा याद कराये। बिस्मिल्लाह की तलकीन करें और खुद भी इस पर अमल करे। खाना खाने बैठे तो खुद भी ऊंची आवाज में बिस्मिल्लाह पढ़े और बच्चे को भी तलकीन करे। खाने से फारिग होने के बाद अल्लाह का शुक्र अदा करे और बच्चे को खाना खाने के बाद की दुआ याद कराये। कभी कभी बच्चों को कुछ तोहफा (Gift) देते रहे। जब कोई चीज दे तो बच्चे को शुक्रिया या जजाकअल्लाह कहने की आदत डालें। घर में दाखिल हो तो सबको सलाम करे और बच्चों को भी सलाम की आदत डालें। जब घर से बाहर जा रहे हो तो ''अल्लाह हॉफिज'' कहें और कहलवाये। बिस्मिल्लाह तवक्कलतु अलललाह कहने की आदत डालें। सफर पर जा रहे हो तो सफर की दुआ पढवायें। बिस्मिल्लाह करके सवारी पर बैठे। किसी भी काम को शुरू करने से पहले बच्चे

से बिस्मिल्लाह पढवाये। सोने से पहले की दुआ और सोकर उठने की दुआ wash room में जाने से पहले की दुआ और बाहर आने की दुआ याद कराये। और ताकीद करे कि wash room में जाकर बाते ना करें।

''पाकी, सफाई और तहजीब''

खाने से पहले और खाना खाने के बाद और बाहर से आने के बाद हाथ धुलवाये। खाने के बाद कुल्ली करवायें। कम से कम दिन में दो बार मिसवाक या ब्रश करवाये। रोजाना नहाने की आदत डालें। बच्चों को गुसल के फरायज बताये। हफ्ते में एक बार नाखून तराशे। कपड़ों की सफाई का ध्यान रखें। खाना खाते हुए बेकार की बातों से बचाये। बल्कि अल्लाह का जिक्र करवाने की आदत डालें।

खिदमत का जजबा उजागर करें। बतायें के दूसरों की खिदमत करना बहुत सवाब का काम है। बड़ों की इज्जत करना सिखायें। हर एक को सलाम करवायें। दूसरों की चीजों को बैगर इज़ाजत हाथ ना लगाये। अगर कुछ खा रहे है तो दूसरों की तवाज़ो(Share) करें।

एक बार हुजूरे अकदस स0अ0 व सल्लम सफर में थे। सफर में कुछ लोगों ने रोजा रखा और कुछ लोग उन रोजेदारों की खिदमत में लगे रहे। इफ्तार के वक्त आपने सहाबा से फरमाया कि खिदमत करने वाले रोजा रखने वालों से ज्यादा सवाब में बाज़ी ले गये।

अगर बच्चे बार–बार सवाल करे तो उनका जवाब दे। उनको इस बात पर डाटें नहीं। अच्छे कामों की तलकीन करते रहे। बार बार कहने पर भी अगर बच्चे ना माने तो उनको हल्की सजा भी दें। कभी कभी बच्चों को कुछ तोहफा (Gift) देते रहे। Early to bed, Early to rise, Makes a man, Healthy Wealthy and wise. जल्दी सोने व जल्दी उठने की आदत डालें। दायीं करवट से सोने की ताकीद करें। लडकों को उल्टे लेटने और लडकियों को सीधा लेटने से राके। मोबाईल से दूर रखे।

इन सब बातों का अगर हम शुरू से ही तवज्जो देगें तो बच्चे सच्चे, ईमानदार नफीस, दीनदार व सआदतमन्द बनेगे। घर का माहौल बहुत खुबसूरत हो जायेगा। अगर इन सब बातों का हर आदमी ख्याल

रखेगा तो पूरे माशरे में सुधार आ जायेगा। एक खूबसूरत माशरा वजूद में आयेगा।

''बच्चों की जिस्मानी तरबियत''

बच्चा, बन्दर और बकरी कभी चैन से नहीं बैठते। अगर बच्चा तन्दरूस्त होगा तो खेलकूद और शरारते जरूर करेगा। बच्चा अगर कोई activity नहीं कर रहा है तो समझना चाहिए कि बच्चा कुछ बीमार है। बच्चों को कभी खेलकूद से ना रोके। बड़े बच्चों को फुटबाल, बैडमिन्टन और मुमकिन हो तो तैराकी और घुड़सवारी सिखाये।

''हजरत जुनैद बगदादी रहमतुल्लाह अलैह''

हजरत जुनैद बगदादी र0अ0 अपने जमाने के औलयाओं में गिने जाते हैं। यह अपने इबतदाई जमाने में पहलवानी किया करते थे और एक बादशाह के शाही पहलवान थे। पहलवानों में भी इनका नाम वक्त के न हारने वाले पहलवानों में गिना जाता था। एक शाही मुकाबले में इनका मुकाबला हुआ। उस जमाने में जब शाही मुकाबला होता था तो बादशाह भी उस मुकाबले

को देखने के लिए आया करता था। इनके मुकाबले में एक कमजोर सा पहलवान आया। वह एक सय्यद जादा था। जब वह मैदान में आया तो सब लोगों ने कहा कि इतने बड़े पहलवान के मुकाबले में यह कमजोर सा आदमी कहॉ टिक पायेगा। जब दोनों पहलवान मैदान में उतरे तो इस सय्यद जादे ने पंजा लड़ाते हुए हजरत जुनैद से कहा कि मैं तीन दिन से भूखा हूॅ और घर पर मेरे बीवी बच्चे भी भूखे है। मैं एक सय्यद जादा हूॅ। अगर तुम मेरे से हार जाओगे तो मेरे हालात सही हो जायेगे। तुमको मेरी वजह से शर्मिन्दा होना पड़ेगा। तु अल्लाह के वास्ते इसको बरदाश्त कर लेना। दोनों का मुकाबला शुरू हुआ और उस सय्यद जादे ने हजरत जुनैद को गिरा दिया। सब लोग सकते में आ गये। बादशाह ने कहा कि मुकाबला फिर होगा। फिर मुकाबला हुआ और उस सय्यद जादे ने फिर जुनैद को गिरा दिया। यह देख कर बादशाह ने हजरत जुनैद को बहुत लान तान किया। मगर वह सर झुका कर सुनता रहा।

रात को जब वह सोया तो ख्वाब में हुजूर स0अ0 सल्लम की ज्यारत हुई और उन्होने जुनैद से फरमाया आज तूने मेरी औलाद की इज्जत रख ली। तू एक दिन

औलियाओं का बादशाह होगा। एक वक्त ऐसा हुआ कि हजरत जुनैद बगदादी बहुत बड़े औलिया कहलाये।

‘‘बेईमान दोस्त’’

एक आदमी था जो नौकरी करता था। जब उसका रिटायरमैंट हुआ तो उसको सोलह लाख रूपये फण्ड के मिले। वह सोच रहा था कि इस पैसे से मैं कोई काम कर लूंगा और बुढापे में मेरा गुजर बसर अच्छी तरह से हो जायेगा। उसका एक दोस्त था। उसके मुह में पानी आ गया और उसको मश्वरा दिया कि तू इस पैसे को मेरे साथ तिजारत में लगा दे। तुझको बीस पच्चीस हजार हर महीने मुनाफे के मिल जाया करेगें। उसने उस पैसे में से उस दोस्त को आठ लाख रूपये दे दिये। वह दोस्त एक साल तक उसको नफा देता रहा। एक साल के बाद उसने कहा कि अगर तू बाकी रकम भी इस तिजारत में लगा देगा तो तेरा नफा दुगना हो जायेगा। इस बात का उसने अपनी बीवी से मशवरा किया। बीवी ने कहा कि यह आदमी ईमानदार है। एक साल से नफा दे रहा है। उसको बाकी पैसा देने में कोई हर्ज नहीं। उस आदमी ने अपने दोस्त को बाकी आठ लाख रूपये भी दे दिये। रूपये

लेने के बाद वह दोस्त कई महीनों तक नहीं आया। अब उस आदमी ने अपने दोस्त की खैर खबर ली और उससे मिला। दोस्त ने उसके सामने रोना धोना शुरू कर दिया और बोला मैं तो तबाह हो गया। मेरा सारा पैसा भी खत्म हो गया। मेरा दिवाला निकल गया। अब मैं तुम्हारा पैसा कहां से दूॅं। उस बेईमान दोस्त ने उसका सारा पैसा हड़प लिया।

अब यह आदमी बेसहारा हो गया। उसके पास अब गुजारे लायक भी पैसे नहीं रहे। यह बेचारा एक बुजुर्ग के पास गया और उनसे अपनी दास्तान सुनाई। उन बुजुर्ग ने उससे कहा कि कोई बैगेर पैसे के तिजारत शुरू करो। मैं इन्शाल्लाह तुम्हारे लिये दुआ करूंगा।

यह आदमी एक जानने वाले खाद डिलर के पास गया और उससे कहा कि मुझको दस कटटे खाद के दे दो। मैं बेंच कर पैसे आपको दे दूंगा। वह खाद वाला उनको जानता था। उसने उनको दस कटटे दे दिये। इस आदमी ने लोगों से मिलना शुरू कर दिया। दस दिन में ही वह कटटे बेच दिये और खाद डीलर को पैसे दे दिये। अब उसने उससे पन्द्रह कटटे ले

लिये। इसी तरह वह खाद उससे खरीदता रहा और बेचता रहा। उसका काम खूब चल गया। वह महीने में सौ कटटे तक बेचने लगा। फिर एक वक्त ऐसा आया कि वह कम्पनी से बराहे रास्त खाद खरीदने लगा। ट्रकों के हिसाब से वह खाद मंगाने लगा। इसी तरह उसको कई साल हो गये। एक दिन वह आदमी उन बुजुर्ग के पास गया और उनसे बताया कि आपकी दुआ से मैं अब एक करोड़ का मालिक बन गया हूॅं। अल्लाह ने एक रास्ता बन्द किया था और उससे भी ज्यादा नफे का दूसरा रास्ता खोल दिया।

‘‘कुरान का पहला सब़क‘‘

इल्म की अहमियत पर सबसे पहले कुरान शरीफ ने तवज्जोह दिलाई। कुरान शरीफ में सब से पहली आयत जो नाजिल हुई वो ‘‘इकरा‘‘ थी यानी पढो।

इकरा बेइस्मे रबोकल लजी खलक

पढो उस रब के नाम से जिसने तुझको पैदा किया।

हदीस शरीफ में आया है–

‘‘तलबुल इल्मा फरीजतन अला कुल्ले मुस्लिम‘‘

यानी इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज है। हुजूर स0अ0 सल्लम ने फरमाया कि मुझको मुअल्लिम बनाकर भेजा गया है। फरमाया आलिम, तालिबे इल्म या उनसे मुहब्बत करने वालों से मुहब्बत करो।

बदर की जंग में जो कैदी बनाकर लाये गये थे। उनको छोड़ने की हुजूर स0अ0 सल्लम ने दुनिया की अजीबो गरीब शर्त रखी। जो कैदी दस मुसलमानों को लिखना, पढना सिखायेगा। उसको आजाद कर दिया जायेगा।

जैद बिन सबित जब हुजूर स0अ0 व सल्लम के पास आये तो उनको ग्यारह सूरते हिफज याद थी। वह बहुत जहीन थे। उनसे आप ने फरमाया कि जाओ युहुदियो की जबान सीखो। क्योंकि यह लोग मेरे पास आते है और इनके खतूत के जवाब भी देने होते है।

हजरत जैद गये और एक महीने के बाद कई जबाने सीख कर हुजूर स0अ0 व सल्लम के पास आगये। हुजूर ने दुआ दी।

''रब्बे ज़िदनी इलमा''

अल्लाह तुम्हारे इल्म को बढाये।

एक गॉव का लडका था। उसकी किरत इतनी अच्छी थी, कि लोग आवाज को सुन कर उसके चारों तरफ जमा हो जाते थे।

यह दस बारह साल का था। उसके बाप ने उसको बकरिये चराने के लिए जंगल में भेज दिया। वह बेचारा सुबह को बकरियॉ लेकर जंगल में निकल जाता और अंधेरा होने पर घर लौट आता। यही उसका रोज का मामूल था।

मुहल्ले में उसका एक दोस्त था। एक दिन उस बकरियां चराने वाले से उस दोस्त की मुलाकात हो गई। उस दोस्त से इस चरवाहे ने पूछा कि आजकल क्या कर रहे हो? उस दोस्त बच्चे ने बताया कि मैं तो एक मदरसे में पढ रहा हूॅ। अच्छा खाना मिलता है, कपड़े मिलते है। मेरे तो मज़े ही मज़े है। इस चरवाहे लड़के ने कहा कि मुझको भी अपने साथ ले जाओ।

ये चरवाहा अपने दोस्त के साथ मदरसे में चला गया। और मदरसे के मोहतमिम से कहा कि यह बच्चा भी पढना चाहता है। उसका दाखिला कर लिया गया।

इस बच्चे ने पढना शुरू कर दिया और इतना अच्छा कुरान शरीफ पढने लगा कि उसके उस्ताद ने उसे 100 प्रतिशत अंक दिये। यह वहां रहते हुये एक बहुत अच्छा कारी बन गया। जब यह तिलावत करता तो इसका कुरान शरीफ सुनने के लिए लोग खड़े हो जाते थे। यह बच्चा उसी मदरसे में तालिम हासिल करता रहा और एक बहुत बड़ा आलिम बन गया।

''इमाम मुहम्मद''

इमाम मुहम्मद के वालिद अपने बेटे को इमाम अबु हनीफा के पास ले गये। उनसे अपने बेटे को तालिम देने की दरख्वास्त की । यह एक बहुत अमीर आदमी थे। इमाम मुहम्मद बहुत खुबसूरत थे और बहुत कीमती लिबास पहने हुये थे।

इमाम अबु हनीफा ने उसके वालिद के सामने दो शर्ते रखी। एक तो यह कीमती लिबास पहन कर नहीं आयेगे। दूसरे हमेशा मेरे पीछे बैठकर तालिम हासिल करेगे। इमाम मुहम्मद के वालिद ने शर्त मन्जूर कर ली। अब इमाम मुहम्मद रोजाना सादे लिबास में आने लगे और पीछे बैठकर तालीम हासिल करने लगे। कुछ दिन

के बाद इमाम अबु हनीफा ने इमाम मुहम्मद से कहा कि कुरान की फला सूरत सुनाओं। इमाम मुहम्मद न कहा मैं कुरान का हाफिज नहीं हूॅ। इमाम अबु हनीफा ने कहा कि मेरा शगिर्द बनने के लिए कुरान का हाफिज होना जरूरी है। यह सुनकर इमाम मुहम्मद चले गये। एक हफ्ते के बाद आये और इमाम अबु हनीफा से कहा कि जनाब मैं हिफज करके आ गया हूॅ। इस पर इमाम साहब को बडा ताज्जुब हुआ कि एक हफ्ते में कैसे हिफज कर लिया। बड़े होकर इमाम मुहम्मद एक बहुत बड़े मुहददिस हुए।

''पढने का शौंक़''

एक लडका जिसको पढने का बहुत शौंक था। वह एक बुढ़े मॉ—बाप का बेटा था। यह बेटा अल्लाह ताला ने उनको बीस पच्चीस साल के बाद दिया था। उन्होने इसको मैट्रिक तक पढाया। वह बहुत अच्छे नम्बरों से पास हो गया। अब उसके बाप ने कहा कि बेटे अब मेरी उम्र बहुत ज्यादा हो गई है। अब मैं तुझको आगे नहीं पढा सकता। अब तुम कुछ काम करो। जिससे घर का खर्चा चलता रहे। घर के एक हिस्से में दुकान थी। बाप ने उसमे कुछ सामान डलवा

दिया। अब वह लडका सुबह से शाम तक दुकान में बैठता। जिससे घर का खर्चा चलता । उसने कुछ पैसे भी इकटठा कर लिये और वह इण्टरमीडिएट का कोर्स ले आया। वहॉ बैठकर पढता रहता था। बाप ने कहा कि बेटा तुम दुकानदारी क्या करोगे? तुम तो सारा दिन पढते रहते हो। अब उस बेचारे पर दुकान में बैठकर पढने पर भी पाबंदी लग गई। उसने अपने बाप से कहा कि मैं सारे दिन बैठा रहता हॅू। अब रात को मैं अपने दोस्तों के पास जाया करूंगा। इस पर उसने अपने बाप को राजी कर लिया। अब वह अपने हमजमात दोस्तों के पास जाकर पढने लगा। एक दिन उसने इण्टरमीडिएट का परीक्षा फार्म भी भर दिया। अब इम्तेहान का वक्त आया। उसने अपने बाप से कहा कि मै अब रोजाना सुबह को जाकर थोक के दुकानदारों के यहां से दुकान का सामान लेकर आया करूंगा। वहां से सामान सस्ता मिल जाता है। अब वह रोजाना जाता और सामान की लिस्ट दुकानदार को देकर इम्तेहान देने चला जाता और पेपर खत्म होने के बाद सामान लेकर घर वापस आ जाता। इसी तरह उसने अपना इम्तेहान दिया। कुछ दिन बाद उसका नतीजा आ गया और पता चला कि उसने बोर्ड में अव्वल मकाम हासिल किया है। उसका

फोटो अखबार में छपा। फोटो देखकर उसके बाप के पास मुबारकबाद के लिए लोग आने लगे। बाप ने कहा कि मेरा बेटा तो स्कूल जाता ही नहीं, अव्वल कहां से आता। लोगों ने उसको अखबार दिखाया और उसके बाप को समझाया कि जब बच्चे को पढने का शौंक है तो तुम इसको पढने क्यों नहीं देते। लोगों के कहने पर बाप राजी हो गया। उस लडके को दो वजीफे मिलने लगे। एक सरकार की तरफ से और दूसरा NGO की तरफ से। उसने अब Engineering में दाखिला ले लिया। B.Tech. में भी वह नुमाया पोजिशन लाया और उसका Electric Department में Executive Engineer की पोस्ट पर तकररूर हो गया।

आज हमारे बच्चों को ऐसी ही मेहनत और शौंक की जरूरत है। जब कोई हिम्मत और शौंक से किसी काम को करता है तो अल्लाह ताला उसको जरूर कामयाबी देता है।

यकीं मोहकम अमल पैहम, जिन्दगी फातेह आलम,
जिहादे जिन्दगानी में है, ये मर्दों की शमशीरें।

''एक लड़की का किस्सा''

एक लड़की जिसको तालीम का बडा शौंक था। उसके वालिद एक कालेज में उर्दु के लैकचरर थे। हाईस्कूल में उसने नुमाया नम्बरों से कामयाबी हासिल की। उसने अपने वालिद से आगे पढने की ख्वाहिश जाहिर की। क्योंकि आगे मखलूत निजामें तालीम थी। उसके वालिद एक मजहबी ख्याल के आदमी थे। उन्होने बेटी को इजाजत नहीं दी। बेटी ने कहा अब्बु मै कॉलेज नहीं जाऊंगी। आप मुझको **F.Sc.** के कोर्स की किताबे ला दे। मैं घर पर ही पढती रहूंगी। वालिद ने उसकी इस तजवीज को कुबूल कर लिया और उसको साईस की किताबे ला दी। अब वह घर पढती रहती और हमजमात सहेलियों के पास जाकर उनसे नोटस् ले लिया करती। अगर कुछ समझ में ना आता तो अपनी मुश्किलात अपने वालिद को लिखकर दे देती। वालिद उस मजमून के लैकचरर से उसके नोटस बनवाकर ला देते। क्योंकि उसके वालिद भी उस कालेज में लैकचरर थे। इस वजह से उसको कालेज में प्राईवेट दाखिला मिल गया। और कभी कभी जाकर वो प्रेक्टिकल भी कर लिया करती। अब इम्तेहान हुये और उसने 90 प्रतिशत

नम्बरों से कामयाबी हासिल कर ली और मेडिकल का कम्पटीशन इम्तेहान भी अच्छे रेंक से पास कर लिया। उसने गर्लस मैडिकल कॉलेज में दाखिला ले लिया। उसमें भी उसने नाम पैदा किया। आज वह एक कामयाब लेडी डाक्टर है और कामयाब प्रेक्टिस कर रही है।

अगर कुछ कर गुजरने की आदमी ठान ले और अल्लाह पर भरोसा रखकर आदमी आगे बढे तो कामयाबी उसके कदम चूम लेती है।

उक़ाबी रूह जब बेदार होती है, जवानों में।
नजर आती है उनको अपनी मंजिल आसमानों में।।
इकबाल

''इमाम युसुफ''

यह एक यतीम और गरीब लडके थे। आमदनी का कोई जरिया नहीं था। खाने के लाले पड़े रहते थे। उनकी मॉ ने उनको एक धोबी के पास भेज दिया। जिससे उनको कपड़े धोने और प्रैस करने का काम भी आ जायेगा और कुछ पैसे भी मिलने लगेगें। जब इमाम युसुफ धोबी के घर जाया करते थे। तो रास्ते में इमाम

अबुहनीफा का घर था। अकसर वे उनके दर्स में बैठ जाया करते थे। इमाम अबुहनीफा ने इनकी फिरासत को महसूस कर लिया और उनसे कहा कि तुम यहां तालीम हासिल करो। जितने पैसे धोबी आपको देता है। उतने पैसे मैं तुमको दे दिया करूंगा। यह सिलसिला चलता रहा। एक दिन उनकी वालिदा को पता चला कि आपका बेटा तो धोबी के यहां जाता ही नहीं बल्कि अबुहनीफा के दर्स में जाता है।

इमाम युसुफ की वालिदा एक रोज इमाम अबुहनीफा के पास गई और बोली मैं तो अपने बेटे को धोबी के पास इसलिए भेज रही थी कि वह धोबी का काम सीख लेगा। और हमारा गुजारा होता रहेगा। इमाम अबुहनीफा ने कहा कि मैं इसको ऐसा इल्म व फन सिखाऊंगा। जिससे यह पिस्ते का हलवा खाया करेगा। बुढिया चुप होकर चलीं गई। इमाम युसुफ इमाम अबुहनीफा की शार्गिदगी में पढकर एक बहुत बडे आलिम बन गये। और एक दिन खलीफा हारून रशीद ने उनको मुल्क का चीफ जस्टिस बना दिया।

एक रोज इमाम युसुफ खलीफा हारून रशीद के दरबार में बैठे थे। तो उनके गुलाम ने इमाम युसुफ को कुछ लाकर दिया। इमाम ने पूछा कि यह क्या है?

बादशाह ने कहा कि यह पिस्ते का हलवा है। यह हलवा हम आपको दे रहे हैं। क्योंकि आपको दिमागी काम करना होगा। यह सुनकर इमाम युसुफ को वह बात याद आ गया। यह थी इमाम अबु हनीफा की फिरासत। उनको अन्दाजा हो गया था कि यह लडका एक दिन बहुत बडे ओहदे पर फायज होगा।

''तीन बेटे''

एक आदमी के तीन बेटे थे। उसने अपने तीनों बेटों का नाम अब्दुल्लाह रखा। उमर गुजरती गई। एक दिन उसका वक्त आ गया। उसने एक वसीयत की। अब्दुल्लाह को विरासत मिलेगी। अब्दुल्लाह को विरासत मिलेगी। अब्दुल्लाह को विरासत नहीं मिलेगी। उसकी मौत के बाद विरासत का मामला पेश आया। इसकी विरासत का फैसला कैसे हो? तीनों ने काजी के पास जाने का फैसला किया। रास्ते में एक आदमी को देखा कि वह कोई चीज तलाश कर रहा था। उस आदमी से पूछा कि क्या तलाश कर रहा है? उसने कहा कि मेरा ऊॅट खो गया है। मैं उसको तलाश कर रहा हूॅ। उनमें से एक ने कहा कि तुम्हारा ऊॅट काना था। उसने कहा हॉ। दूसरे ने पूछा कि ऊॅट लगंडा था। उसने कहा हॉ।

तीसरे ने कहा क्या तुम्हारे ऊॅट की दुम कटी हुई थी। उसने कहा हॉ। तीनों ने कहा बाखुदा हमें उसका मालूम नहीं। उस आदमी ने कहा कि ऊंट तुम्हारे पास ही है। मैं तुमको काजी के पास ले जाऊंगा। उन तीनों ने कहा कि ठीक है हम तीनों भी काजी के पास ही जा रहे है। यह सब लोग काजी के पास गये तो ऊॅट वाले ने अपना किस्सा काजी को सुनाया। काजी ने कहा कि जब तीनों निशानियां तुमको मालूम है तो ऊॅट तुम्हारे पास ही है। उन तीनों अब्दुल्लाह ने कहा कि ऊॅट बा खुदा हमारे पास नहीं है। हमनें सिर्फ उसकी निशानियां देखी थी। काजी ने एक अब्दुल्लाह से पूछा कि तुमको यह कैसे मालूम हुआ कि ऊॅट काना है। उसने कहा कि जिस रास्ते से हम आ रहे थे। उस रास्ते का घास एक ही तरफ से खाया हुआ था। दूसरे अब्दुल्लाह से पूछा कि तुमको कैसे मालूम हुआ कि ऊॅट लंगडा है। उसने कहा कि मैंने देखा कि ऊॅट के तीन पैरों के निशान तो नुमाया थे। चौथा निशान बहुत कम था। जब काजी ने तीसरे अब्दुल्लाह से पूछा कि तुमको कैसे मालूम हुआ कि ऊॅट की दुम कटी हुई है। उसने कहा कि ऊॅट का गोबर एक सीध में पडा हुआ था। जब ऊॅट चलता है तो दुम को हिलाता रहता है और उसका गोबर भी दोनों

तरफ फैला हुआ होता है। इसलिए मैनें अन्दाजा लगाया कि ऊॅट की दुम कटी हुई थी। तीनों की बात सुनकर काजी ने ऊॅट वाले से कहा कि तुम जाओं ऊॅट इनके पास नहीं।

अब काजी ने इन तीनों की आमद के बारे में मालूम किया। उन्होंने अपना किस्सा सुनाया। काजी ने कहा कि आज रात तुम मेरे मेहमान खाने में रूको। इसका फैसला मैं कल सुनाऊंगा। उन तीनों ने महसूस किया कि हमारी निगरानी की जा रही है, उनके सामने गोश्त का शोरबा और रोटियां लाई गई। तो एक ने कहा कि ये गोश्त कुत्ते का है। दूसरे ने कहा कि ये रोटियां एक हामला (Pregnent) औरत की बनायी हुई है। जिसके दिन पूरे हैं। तीसरे ने कहा कि यह काजी हराम की औलाद है। यह बात काजी तक पहॅुची। सुबह को काजी ने पूछा कि यह किसने कहा कि गोश्त कुत्ते का है? पहले ने कहा कि यह मैने कहा। काजी ने कहा कि तुमको यह कैसे मालूम हुआ कि यह गोश्त कुत्ते का है। उसने कहा कि गाय या बकरे के गोश्त में चर्बी ऊपर नीचे लगी होती है। इसमें सारी चर्बी ही चर्बी थी। गोश्त बहुत थोडा था। दुसरे से पूछा कि तुमको यह कैसे मालूम हुआ कि ये रोटियॉ हामला औरत की बनाई

हुई है। उसने कहा कि रोटी फूली हुई थी। और दूसरी तरफ से कच्ची थी। इससे मालूम होता है कि औरत को खडे होने में दिक्कत हो रही थी। उसने दूसरी तरफ से रोटियां नहीं सेकी। अब काजी ने तीसरे अब्दुल्लाह से पूछा कि तुमको यह कैसे मालूम हुआ कि काजी हराम की औलद है? उसने कहा क्योंकि आप हमारे ऊपर निगरानी कर रहे थे। और कुत्ते का गोश्त हमारे लिए पकवाया और एक ऐसी औरत से रोटियां पकवाई, जो हामला थी। काजी यह सुनकर अपने घर गया। और अपनी मॉ से अपने बारे में पूछा। उसकी मॉ ने इकरार किया।

काजी ने फैसला सुनाया कि पहले दो को विरासत मे से हिस्सा मिलेगा। तीसरे को नहीं मिलेगा। क्योंकि तीसरे का भी मेरे जैसा ही हाल है। अब तीसरा अपनी मॉ के पास गया और उसने माजरा पूछा। मॉ ने बताया कि तुम्हारा बाप एक दिन जब फजर की नमाज को गया तो तुम उसको बाहर पडे हुए मिले। और तुम्हारा नाम भी उसने अब्दुल्लाह रख दिया। इस तरह उन तीनों की विरासत का फैसला हुआ।

''औरंगजेब''

औरंगजेब शाहजहॉ की छठी औलाद था। इसकी पैदायश 3 नवम्बर 1618 ई0 में हुई थी। औरंगजेब की हुकुमत 1658 ई0 से लेकर 1707 ई0 तक रही। औरंगजेब के बाद बहादुरशाह जफर बादशाह बना। यह मुगल हकूमतों का आखरी बादशाह था।

औरंगजेब को एक कटटर हुकमरॉ के तौर पर जाना जाता है। जिस पर इलजाम है कि उसने मन्दिरों को तोडा। मगर इतिहास की किताबों में लिखा है औरंगजेब ने 400 से ज्यादा मन्दिरों को दान दिया। ''कामाख्या'' का मन्दिर भी उसकी दी हुई जमीन पर बना है।

इलाहाबाद के एक इतिहासकार का दावा है कि औरंगजेब ने संगम के किनारे सोमेश्वर महादेव मन्दिर को बहुत बडी तादाद में दान दिया।
इतिहासकार और सर्वेश्वरी डिग्री कॉलेज के प्रिंसिपल प्रदीप केसरवानी इतिहास के सबूतों के मुताबिक कहते है कि अपने एक फौजी मारके के मुताबिक औरंगजेब और उसकी सेना इस मन्दिर के नजदीक रूकी थी।

उस दौरान उसने मन्दिर का दौरा किया और इस मन्दिर की देखभाल के लिए बडा दान भी दिया। इन सबूतों का जिक्र मन्दिर के अन्दर मौजूद धर्म दंड (मजहबी पिलर) पर है। उन्होने आगे कहा कि स्तम्भ पर संस्कृत के पन्द्रह जुमलों में इस सबूत का जिक्र मिलता है। जिसमें कहा गया है कि देश के बादशाह ने 1674 में इस मन्दिर का दौरा किया था। इसे जमीन और पैसों की शक्ल में बडी मिकदार में दान दिया था। हनुमान मन्दिर के पास होने से इस पिलर पर सिंदूर का इस्तेमाल होता रहा। जिससे पिलर पर लिखावट अस्पष्ट हो गई।

केसरवानी ने बताया कि इन सबूतों का जिक्र इलाहाबाद के पहले मेयर और ओडिशा के साबिक़ गर्वनर ने भी अपनी तहरीर में किया। केसरवानी कहते है, 27 जुलाई 1977 को राज्यसभा में दिये गये अपनी तकरीर में पांडे ने सदन को बताया कि इलाहाबाद नगर पालिका का चैयरमैन रहते वक्त मन्दिर के झगडे का मामला उनके सामने आया था। एक फरीक ने औरंगजैब के जरिये दिये गये दान के दस्तावेज मेरे सामने पेश किये थे। यह मामला बाद में जस्टिस टी0पी0 सप्रु की कमेटी को सौंप दिया। उस कमेटी ने उन सभी मन्दिरों

से उन दस्तावेजों को मांगा। जिन्होने औरंगजेब से दान लिया था।

जस्टिस सप्रु कमेटी के सामने उज्जैन महाकालेश्वर मन्दिर, सरजम के जैन मन्दिर समेत दक्षिण भारत के कुछ मन्दिरों के दस्तावेज पेश किये। केसरवानी की बात की ताईद करते हुये इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के इतिहासकार प्रोफेसर योगेश्वर तिवारी कहते है कि औरंगजेब ने जिस तरह मन्दिरों को अतियात (Gift) दिये, यह सब आप Google पर देख सकते है।

औरंगजेब ने जितने मन्दिर तुड़वाये उससे कही ज्यादा बनवाये थे। विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार रिर्चड ईटन के मुताबिक मुगलकाल में मन्दिर को तुड़वाना मुश्किल काम था। जब भी ऐसा हुआ तो उसके कारण सियासी रहे। ईटन के मुताबिक वह मन्दिर तोड़े गये। जिनमें विद्रोहियों को शरण मिलती थी या जिन मन्दिरों में शहनशाह के खिलाफ साजिश रची जाती थी। उस वक्त मन्दिर तोडने को तसव्वुर नहीं था। दक्षिण भारत में कभी मन्दिरों को निशाना नहीं बनाया गया। उत्तर भारत में जरूर कुछ मन्दिरों पर हमला किया गया।

जैसे मथुरा व केशवराम मन्दिर। लेकिन इसकी वजह मजहबी नहीं थी। मथुरा के जाटों ने सलतनत के खिलाफ बगावत की थी। इसलिए यह हमला किया गया था। मन्दिर तोडने का मुददा 1980–90 के दौरान ही उरूज पर आया।

जजिया– औरंगजेब के द्वारा लगाया गया जजिया वक्त के मुताबिक था। यह अमीरों पर लगाया गया था। गरीबों यतीमों और लाचारों पर जजिया नहीं लगाया जाता था। अमीर मुसलमानों से जकात ली जाती थी।

''शहजादी के तीन सवाल''

ईरान का एक बादशाह था। उसकी एक बेटी थी। बादशाह की जिन्दगी बडे आराम से गुजर रही थी। वह एक बहुत बडी सलतनत का मालिक था। वह अपनी बेटी के लिए बहुत परेशान था। वह चाहता था कि बेटी की शादी करके इस फर्ज़ से आजाद होजाऊं। मगर शहजादी ने एक शर्त रखी हुई थी कि जो आदमी मेरे तीन सवालों के जवाब दे देगा। मैं उससे ही शादी करूंगी। उससे शादी के लिए बहुत दूर दूर से शहजादे आये। लेकिन सब नाकाम रहे। कोई भी उसके सवालों

के जवाब ना दे सका। उस मुल्क में एक नौजवान रहता था। जिसका नाम आजम था। उसका बाप उस मुल्क का बहुत बड़ा आलिम था। बडे बडे शहजादे और दीन दार लोग उन से इल्म हासिल करने आया करते थे।

एक दिन उनके बेटे आजम ने कहा कि शहजादी से शादी के लिए मैं भी मुकद्दर आजमाना चाहता हूॅ। उसके बाप ने कहा कि कई मुल्कों के शहजादे और बडे लोग उसके सवालों का जवाब नहीं दे सके। अगर तू भी जवाब ना दे सका तो तेरा कुछ नहीं बिगडेगा, बल्कि मेरी रूसवाई हो जायेगी। आजम ने कहा कि जब बडे बडे लोगों ने अपनी बेइज्जति महसूस नहीं की तो आप क्यूं डर रहे है। मैं भी उन लोगों में शामिल हो जाऊंगा। खैर उसके बाप ने उसको इजाजत दे दी। अगले दिन आजम ने ऐलान कर दिया कि मैं भी मुकद्दर आजमाऊंगा। इसका शोर चारों ओर शहर में हो गया। अगले रोज आजम दरबार में हाजिर हुआ और अपनी मंशा का इजहार उस बादशाह से किया। बादशाह ने इजाजत दे दी। उसके सवालों का जवाब सुनने के लिए सैकडों लोग दरबार में जमा हो गये।

शहजादी आकर बैठ गई और उसने आजम से पहला सवाल किया। उसने शहादत की उंगली ऊपर उठायी। आजम ने दो उंगलियां ऊपर उठा दी। शहजादी खुश हो गयी और उसने कहा कि शाबाश तुमने एक सवाल का जवाब कामयाबी के साथ दे दिया। अब शहजादी ने अपना दूसरा सवाल किया। शहजादी अपनी कुर्सी से उठी और अपनी तलवार हवा में चलाकर फिर कुर्सी पर बैठ गई। आजम ने उसके जवाब में अपनी जेब से पैन निकाल कर हवा में फहरा दिया। शहजादी बहुत खुश हुई और बोली शाबाश तुमने दूसरे सवाल का जवाब भी बहुत सही दे दिया। चारों तरफ से मुबारकबाद की सदायें आने लगी। अब शहजादी ने अपना तीसरा सवाल किया। वह कुर्सी से उतरी और फिर हलके कदमों से कुर्सी पर जाकर बैठ गई। इसके जवाब में आजम ने अपना हाथ दिल पर रख दिया। शहजादी बहुत खुश हुई और बोली शाबाश तुमने तीसरे सवाल का जवाब भी बाखूबी दिया और शहजादी उठकर महल में चली गई। सब लोग यह जानने के लिए बेचैन थे कि शहजादी ने क्या सवाल किये और उनका जवाब क्या था? लोगों के लिए यह एक राज था। लोग की चारों तरफ से मुबारकबाद की

आवाजे आने लगी। अब बादशाह ने आजम से पूछा कि शहजादी ने क्या पूछा और उसका जवाब क्या था? अगर सही जवाब ना निकला तो तुम्हारा सर कलम कर दिया जायेगा।

आजम ने कहा कि पहला सवाल शहजादी ने एक उंगली उठाकर यह पूछा कि अल्लाह एक है। मैने दोनों उंगलियां उठाकर जवाब दिया कि दो। एक अल्लाह और दूसरा अल्लाह का रसूल। दूसरा सवाल यह था कि तलवार से बडा क्या होता है? मैने जवाब दिया कि तलवार से बडा हथियार कलम होता है। इस हथियार के सामने सब झुक जाते है। बादशाह बहुत खुश हुआ और पूछा कि तीसरा सवाल क्या था? आजम ने जवाब दिया कि शहजादी सीढियों से तेजी से नीचे उतरी और थकी हुई फिर कुर्सी पर बैठ गई। इसका जवाब था कि मैं अब थक गई हूॅ। मगर एक चीज ऐसी है जो कभी नहीं थकती। मैने सीने पर हाथ रखकर जवाब दिया कि दिल जो मॉ के पेट से धडकना शुरू करता है और मौत तक धडकता रहता है। बादशाह उठा और उठकर आजम को गले लगा लिया। दरबार में चारों तरफ मुबारक हो, मुबारक हो की सदाये गूंजने

लगी। बादशाह ने दरबार में कहा कि लोगों गवाह रहना मैने इस लडके का हक अदा कर दिया है।

बेशक अल्लाह और उसके रसूल पर इतेकाद अटल है और कलम का वार सबसे ज्यादा ताकतवर हथियार है। और दिल ऐसा आजा है जो कभी नहीं थकता और मॉ के पेट से मौत तक बैगर थके धडकता रहता है।

''शाह बहलोल दाना मजजूब''

खलीफा हारून रशीद के दौर में एक मजजूब थे। जिनका नाम शाह बहलोल था। वह घूमते हुये और कुछ बोलते हुये फिरते रहते थे। एक दिन वह हारून रशीद के दरबार में आया। बादशाह कुछ लोगों से गुफ्तगू कर रहे थे। इसी बीच शाह बहलोल दरबार में आये और वह बादशाह को नसीहते करते रहे। जब काफी देर हो गई तो बादशाह ने एक छोटी सी बैंत शाह बहलोल दाना को दी और कहा कि यह उसके लिए है, जो सबसे बडा बेवकूफ होगा। बैंत लेकर बहलोल चले गये।

बादशाह को एक इलाके का सर्वे करना था तो बादशाह ने एक सर्वे टीम उस इलाके में भेजी। उसने

बादशाह के रहने की जगह का इन्तखाब किया। उसने उसके बाद बावरचियों को भेजा गया और हिफाजती दस्ते को भी भेज दिया।

इसी बीच बादशाह बीमार हो गया। एक दिन शाह बहलोल फिर आये और पूछा कि आपने सफर पर जाने का पूरा इन्तजाम कर लिया। बादशाह ने कहां है? बहलोल ने पूछा कि खुदा के पास जाने का भी कुछ इन्तजाम किया है। बादशाह चुप हो गया। अब बहलोल ने वह बैंत कम्बली से निकाल कर बादशाह को दी। यह बैत आपके लिए है। क्योंकि आप से ज्यादा बेवकूफ कोई नहीं।

एक रोज बादशाह सैर के लिए नदी के किनारे गये। वहां पर उन्होने देखा कि शाह बहलोल रेत के घर बना रहे थे। उनकी अहलिया जुबैदा भी साथ थी। जुबैदा ने पूछा कि बहलोल क्या कर रहे हो? बहलोल बोले बीबी जन्नत में घर बना रहा हूॅ। उन्होने पूछा बहलोल बेचोगे। बहलोल ने कहा कि हॉ बीबी बेचूंगा। जुबैदा ने कहा बाबा कितने का है। बहलोल ने कहा एक दिनार का है। जैनब ने एक दिनार उनको दे दिया। बहलोल ने एक दिनार लेकर दरिया में फंक दिया। और रेत के घर को तोड दिया। हारून रशीद ने

कहा कि तुमने एक पागल को एक दिनार देकर खो दिया।

रात को जब हारून रशीद सो रहा था। उसको एक ख्वाब आया। उसने देखा कि जन्नत में एक बहुत आलीशान मकान है और उसमें उनकी बीवी का नाम लिखा है। यह देखकर हारून रशीद अन्दर जाने के लिए आगे बढे तो फरिश्तो ने उनको रोक दिया। और कहा यह तो आपकी बीवी का है। बादशाह की ऑख खुल गई। जब बादशाह उठा तो उसका दिल बडी तेजी से धडक रहा था। अगले दिन फिर हारून रशीद अपनी बीवी के साथ घुमने निकला तो उसने देखा कि बहलोल आज फिर रेत घर बना रहे थे। हारून रशीद ने पूछा कि बाबा ये मकान बेचोगे। बहलोल ने कहा कि हॉ बेचूंगा। पूछा कि कितने का है? बहलोल ने कहा कि तेरी पूरी सलतनत के बराबर का है। बादशाह ने कहा कि कल तो एक दिनार का था। बहलोल ने कहा कि कल बेदेखे सौदा हुआ था। आज देखने के बाद सौदा हो रहा है।

''खलीफा हारून रशीद''

एक बहुत बडे रकबे पर हुकुमत करता था। वह बहुत दीनदार बादशाह था। तमाम रात में 100 रकत नमाज पढा करता था। उसकी अहलिया भी बडी इबादत गुजार थी।

उस जमाने में हज ऊंटों पर या घोडों पर जाकर हुआ करता था। एक मकाम हज को जाते हुये ऐसा था, जिसमें कोई आबादी नहीं थी और पानी का भी इन्तजाम नहीं था। उस रास्ते पर लोगों को सबसे ज्यादा पानी की परेशानी थी। यह इलाका जज़ीराऐ अरब का एक चौथाई था, कईसो मील का रास्ता था। जब काफिला उधर से निकलता तो उसको पानी भी साथ ले जाना पडता था।

एक बार बादशाह की अहलिया जुबैदा ने बादशाह से कहा कि मैं आप से एक तोहफा मांगती हूॅ। वोह यह कि आप इराक से मक्के तक एक नहर बनवा दे। क्योंकि लोगों को हज पर जाने में बडी दिक्कत होती है। और कम ही लोग उधर से गुजरते है। इस रास्ते की लम्बाई तकरीबन 1000 किलोमीटर थी।

बादशाह ने यह बात कबूल कर ली। नहर पर काम शुरू हो गया। कई साल के बाद फरात से अराफात तक नहर तैयार हो गई और पानी जारी हो गया।

एक दिन जुबैदा खातून उस नहर के किनारे बैठी थी, तो उनका खजानची हिसाब का रजिस्टर लेकर आया और बताया कि इस नहर पर 17 लाख सोने दिनार खर्च हुये। जुबैदा खातून ने रजिस्टर लेकर दरिया में फेंक दिया। उनके इन्तकाल के बाद किसी ने ख्वाब में देखा वह कह रही थी कि अल्लाह के फजल से मेरी मगफरत हो गई। ख्वाब देखने वाले ने कहा कि आपकी तो मग़फ़रत होनी ही थी। क्योंकि आपने काम ही ऐसा किया था। जुबैदा ने कहा कि इस पर मेरी मग़फ़रत नहीं हुई। मेरी मगफरत तो इस बात पर हुई कि एक दिन मैं खाना खा रही थी। एक लुकमा मैं मुह तक ले जा रही थी। उसी वक्त आजान हो गई। मेरे सर से डुपटटा खिसक गया मैंने वह लुकमा रोक दिया और सर का डुपटटा सही किया। फिर मैने वह लुकमा मुह में लिया। और जब आजान खत्म हुई, तब मैंने खाना पूरा किया। इस बात से ही मेरी मग़फ़रत हो गई।

''हया और बेहयाई''

एक अमेरिकन इन्जीनियर हिन्दुस्तान आया और कई महीने उसको हिन्दुस्तान में रहते हुए हो गये। एक आदमी ने उससे पूछा कि आपकी बीवी का क्या हो रहा है? उसने कहा कि औरत एक बस का इन्तजार करती है। अगर एक बस निकल गई तो दूसरी का इन्तजार करती है। एक ओर इन्जीनियर स्वीडन से एक प्रोजेक्ट के लिए आया। उससे पूछा गया कि आपके कितने बच्चे है? उसकी उम्र 52 साल की थी। उसने जवाब दिया मैने शादी ही नहीं की। जब मार्किट से दूध मिल जाता है तो फिर घर में गाय क्यों पाले? यह है पश्चिमी देशों में औरत की हैसियत। आजकल इन देशों में शादियॉ करने का रिवाज खत्म होता जा रहा है। अगर शादियॉ होती भी है तो 90 प्रतिशत में तलाक हो जाती है।

दीने इस्लाम में है कि अगर तुम किसी औरत को प्यार करते हो तो उसके खर्चे उठाओ। उसको लाने से पहले उसका महर अदा करेगा, लाने के बाद उसके खाने, पीने और दूसरे खर्चो की जिम्मेदारी लेगा और अगर खाबिन्द मर जाये तो उसकी जायदाद में उसको हिस्सा दिया जायेगा। पश्चिमी देशों में औरत की यह

हैसियत है कि उसको इस्तेमाल करके उसको कूडादान में फेंक दिया जाता है। यानि "Use and through".

निकाह करना– महर, नान व नफका, बच्चों की तरबियत करने के बाद विरासत में हिस्सादारी। रिश्तेदार एक दूसरे के साथ अच्छे ताल्लुक रखें। जो तुझको तोडे तू उससे जुडने की कोशिश कर। जुल्म करने वाले के साथ अच्छा सलूक कर। एक दूसरे के दुख दर्द में शरीक हो। अल्लाह ने इन्सान बनाया, इन्सान ने Robot बनाया। Robot बनाने वाले आदमी ने कहा कि मेरा बनाया हुआ। Robot दूर तक देख सकता है। क्योंकि उसमें Telescope लगा होगा। Robot बारिक से बारिक चीज Bacteria बगैरा को देख सकता है। Robot बहुत दूर की आवाज भी सुन सकता है, जो बहुत कम Frequency की होती है। Robot बहुत सारी जुबाने जानता है। अल्लाह ने कहा कि अगर एक Robot की Shaft टूट जाती है तो Robot खडा हो जाता है। बाकी Robot खडे रहेगें। कोई उस Robot के पास नहीं आयेगा।

अगर एक इन्सान के पेट में दर्द होगा, तो दूसरे इन्सान उसके पास आयेगे और उसकी खिदमत करेगें। उसको दवाई लाकर देगें। Robot में यह चीज नहीं अगर एक Robot में कुछ खराबी पैदा हो तो दूसरा Robot उसके पास नहीं आयेगा। इन्सान में एक दूसरे की हमदर्दी होती है। तुम्हारे Robot में यह हमदर्दी नहीं पायी जाती। यह सब देखकर सांइस दॉ ने कहा कि या अल्लाह तेरा इन्सान मेरे Robot से बेहतर है। इन्सान में सिला रहमी भी पाई जाती है। एक दूसरे की मदद करने में उसको अच्छा लगता है। इतना ही नहीं दुश्मनी की हालत में भी एक दूसरे को सलाम करता है। दुख–दर्द, मरने–जीने में उसकी मदद करता है। अगर माली परेशानी में मुबतला हो गया और कर्ज में दबा हो, तो उसकी मदद करता है। क़ता रहमी नहीं करता। क़ता रहमी करने वालों का कोई अमल कबूल नहीं होता। एक दूसरे क़तेकलामी नहीं करता। तीन दिन से ज्यादा एक दूसरे से ना बोलना अल्लाह को पसन्द नहीं है।

तिरमजी शरीफ में है कि उसकी उम्र बढा दी जाती है। यानि उसकी उम्र में बरकत होती है। अल्लाह

बुरी मौत से उसको बचा लेता है। इन्सान खुशअखलाकी की जिन्दगी गुजारे। पडोसियों के साथ भी अच्छा सलूक करे। चाहे वह किसी भी मजहब का हो। सिला रहमी करने वालों से अल्लाह अपना रिश्ता जोडता है। जो इन्सान, इन्सान से रिश्ता जोडता है, अल्लाह उससे रिश्ता जोड लेता है। कुरान शरीफ की आयतों में सिलारहमी ना करने वालों पर लानत फरमाई गई है। हजरत अली फरमाते है कि अगर कोई इन्सान अल्लाह के लिए तकवा इखतियार करता है तो मैं उसकी चार चीजों की जमानत लेता हूॅ। अल्लाह ताला उसकी उम्र में, रिजक में बरकत फरमायेगें। अल्लाह ताला उसको रिश्तेदारों का महबूब बनायेगें। अल्लाह ताला उसको जन्नत में दाखिल कर देगें।

‘‘दिल का सकून’’

खुशहाली और दिल के सकून का दारोमदार रूपया, पैसे से नहीं है। इसका अन्दाजा इस बात से होता है कि जिन लोगों के पास दुनिया की हर सहुलत मौजूद होती है, उनको भी दिल का सकून मयस्सर नहीं होता। सब कुछ मिलने के बाद भी वह लोग परेशान होते है और वह इस दुनिया में ज्यादा रहना नहीं

चाहते। स्वीडन एक ऐसा मुल्क है, जिसमें हर साल का बजट नफे का पेश किया जाता है। उन लोगों के सामने यह मसला है कि इस पैसे को कहॉ खर्च किया जाये। वहॉ पर बच्चों की पढायी के पूरे खर्च के साथ उसको वजीफा भी दिया जाता है। घरों का कोई किराया नहीं देना पडता। बिजली, पानी सब मुफ्त में मौहय्या किया जाता है। हर बन्दे को जॉब दिया जाता है। अगर जॉब नहीं दिया गया तो उसको वजीफा दिया जाता है। किसी भी चीज पर कोई टैक्स नहीं दिया जाता। बिमार होगा तो मुफ्त इलाज किया जाता है। यानी रोटी, कपडा और मकान और सेहत सब सरकार के जिम्मे होता है। यहां की GDP 621 Billion $ है।

इस सब सहूलियत मिलने के बाद भी वहां के लोगों को सकून नहीं है और सबसे ज्यादा खुदकशी के केस इसी मुल्क में होते है।

यहां के एक डायरेक्टर ने बताया कि डॉक्टरों के पास दरख्वास्तों की फाइलें भरी पडी है। जिसमें लिखा होता है कि रिटायरमैंट के बाद में सिर्फ इतने साल जिन्दा रहना चाहता हूॅ। इसके बाद मुझको जहर का टीका लगा दिया जाये। अगर आदमी में दीन और

फैमली का तसव्वुर खत्म हो जाये तो उसको अपने जीने का मकसद मालूम नहीं होता और वह यह चाहता है कि मैं अब जिन्दा रहकर क्या करूंगा। बुढापे की परेशानियां क्यों उठाऊँ।

इसी लिए कुरान शरीफ में कहा गया है कि –

अला बेजिक्र रिलाही ततमईन्नल कलूव

अल्लाह का जिक्र से ही दिलों में का सकून मयस्सर आता है।

अगर आदमी अपना दिल अल्लाह की तरफ लगा लेगा, तो उसको जिन्दगी का मकसद मिल जायेगा। इस्लाम में खुदकशी को हराम करार दिया गया है।

''तीन लोगों की कहानी''

आदमी को अपने पुराने वक्तों को कभी नहीं भूलना चाहिए। अगर अल्लाह आपको रिज़क़ दे तो उसको अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और उस रिज़क़ को अल्लाह के रास्ते में खर्च करना चाहिए। रिज़क़ माल, दौलत भी होता है। जिस्म की ताकत भी अल्लाह का रिज़क़ होता है। अल्लाह की दी हुई सेहत

भी अल्लाह का रिज़क़ है। उसकी दी हुई नेक औलाद भी अल्लाह का रिज़क़ है। अगर दिये हुए रिज़क़ मिलने के बाद आदमी ''मैं'' और ''मेरे'' के ग़रूर में मुबतला हो जाये तो उसको दी हुई दौलत, उससे छीन ली जाती है। अगर अल्लाह का शुक्र गुजार बन्दा होगा तो अल्लाह उसके रिज़क़ में बरकत देता है। जब आदमी गरूर में मुबतला होता है, तो उसकी दीन और दुनिया सब बर्बाद हो जाती है। हमको उन लोगों के बारे में सोचना चाहिए। जिनके पास ये दौलते नहीं होती। अगर अल्लाह एक दौलत को भी छीन ले तो हमारी जिन्दगी जहन्नुम बन जाती है। इसलिए हमेशा अल्लाह की रहमतों को याद रखना चाहिए।

बनी इसराईल के तीन आदमी थे। उन तीनों के पास के एक आदमी आया। उनमें से वह एक बन्दे के पास पहुँचा और पूछा कि आपको कोई परेशानी तो नहीं है? उसने बताया कि मुझको बरस (Leucoderma) की बिमारी है। मुझसे सब लोग नफरत करते है। मुझको रिज़क़ की भी दिक्कत है। मेरे लिए दुआ करो। उस आदमी ने दुआ की तो वह बन्दा बिल्कुल सही हो गया और उसको एक ऊँट भी मिल गया। एक वक्त आया उसके ऊँटों में बरकत हो गई। एक सौ ऊँट उसके

पास हो गये। वह आदमी दूसरे बन्दे के पास गया और उससे पूछा कि तुमको क्या परेशानी है? उसने कहा कि मैं गंजा हूॅ। मेरी लोग मज़ाक उडाते है और मेरी कोई कमाई भी नहीं। उस आने वाले आदमी ने दुआ की। उस बन्दे के बाल भी आ गये और उसको एक गाय भी मिल गई। उससे उसके पास सैकड़ों गाय हो गई। वह बहुत बडा आदमी बन गया।

अब वह तीसरे आदमी के पास गया। वह अन्धा था। उससे पूछा कि तुझको क्या परेशानी है? उसने कहा कि सबसे बडी परेशानी तो यह है कि मैं अन्धा हूॅ और भीख मॉग कर अपना गुजारा करता हूॅ। उस आने वाले बन्दे ने दुआ की। उसकी आखों की रोशनी आ गई। और उसको एक बकरी भी मिल गई। कुछ दिनों के बाद उसके पास हजारों बकरिये हो गई। उसकी जिन्दगी बडे ऐश से गुजरने लगी।

कुछ दिन के बाद वह दुआ करने वाला बन्दा ऊंट वाले के पास गया। उससे अपनी परेशानी बयान की और कहा तुम्हारे पास भी तो कुछ नहीं था। आज तुम हजारों ऊंटों के मालिक हो। मुझको भी कुछ अल्लाह के वास्ते दे दो। यह सुन कर वह आदमी गुस्से

में आ गया और बोला मै तो जद्दी अमीर हूॅ। मेरे बाप दादा भी अमीर थे। यह बात सुनकर वह मांगने वाला बन्दा यह कहकर चला गया कि तुझको अल्लाह वैसा ही कर दे, जैसा तू था। कुछ दिन के बाद उसकी बिमारी फिर पलट गई और उसके ऊंट भी एक–एक करके मर गये। वह अपनी पुरानी हालत पर पहुॅच गया।

अब दुआ देने वाला बन्दा गायों वाले के पास गया और कहा कि मैं एक गरीब आदमी हूॅ। कुछ मेरी भी मदद कर दो। तुम भी कभी गरीब थे। यह सुन कर वो भी गुस्से में आ गया और कहने लगा कि कि मैं तो खानदानी अमीर हूॅ। पता नहीं कहां–कहां से मांगने वाले आ जाते है। उस मॉगने वाले बन्दे ने कहा कि अल्लाह तुझको वैसा ही कर दे, जैसे तू था। यह कह कर वह चला गया। कुछ दिन के बाद वह आदमी फिर गंजा हो गया और उसकी गाये भी एक–एक करके मर गई और वह अपनी पहले वाली हालत में आ गया।

अब वह बन्दा बकरी वाले के पास गया और उससे भी वही कहा कि मैं गरीब आदमी हूॅ। मेरी मदद कर दो। तुम भी तो कभी मेरे जैसे ही थे। यह सुन कर

वह रोने लगा। बैशक तूने सही कहा कि मैं भी कभी नाबीना और गरीब था। आज मेरे पास इतनी बकरियां है कि वो पहाडों पर चर रही है। तुमको जितनी बकरियां चाहिए, ले जाओ। यह सब मेरे अल्लाह का दिया हुआ है।

यह सुनकर उस मॉगने वाले बन्दे ने कहा कि मैं अल्लाह का फरिश्ता हूॅ। दो आदमी इस इम्तेहान में फेल हो गये और तू पास हो गया। अल्लाह तेरी दौलत में और बरकत दे। कभी भी अल्लाह की ना शुक्री नहीं करनी चाहिए। अपने बीते हुये कल को याद रखना चाहिए। जो अपने कल को भूल जाये, वह अपनी दीन और दुनिया दोनों गवॉ देते है।

हमेशा अल्लाह की दी हुई नेमतों का शुक्र अदा करते रहना चाहिए। जब बन्दा खुशहाली में अल्लाह को याद रखता है तो अल्लाह ताला उसकी दुनिया भी बना देता है और आखरत में भी उसको आला मकाम हासिल होता है।

''बादशाहों के किस्से''

एक बादशाह शिकार के लिए निकला तो एक मजजूब सडक के बीचों बीच लेटा हुआ था। बादशाह के सिपाहियों ने उससे उठने के लिए कहा। मगर वह मजजूब रास्ते से नहीं उठा। बादशाह को गुस्सा आया। मियां पांव कब से फैलाने शुरू किया। मजजूब ने कहा जब से तूने हाथ सुकेड लिये तब से मैने पैर पसारने शुरू कर दिये।

एक बादशाह जिसने इरान को फतेह किया था। बाहर निकला उसने देखा कि एक फकीर सडक के बीचों बीच पैर फैलाये हुए लेटा है। उसके सिपाहियों ने उसको उठाने की कोशिश की। मगर वह नहीं उठा। बादशाह आगे बढा और उस फकीर को लात मारी और बोला तुझे पता नहीं कि मैने इरान को फतेह किया है। फकीर ने कहा कि बादशाह का काम मुल्क को फतेह करना होता है। लात तो गधा मारता है। ऐसा लगता है कि अब गधे मुल्क फतेह करने लगे।

खालिद बिन अब्दुल्लाह काबे का तवाफ कर रहे थे। तब ही एक बादशाह भी तवाफ कर रहा था।

बादशाह ने उन आलिम से कहा कि हुजूर कुछ मागों में खिदमत करने के लिए तैयार हूॅ। मैं यहां अल्लाह मॉगू या आपसे, तवाफ पूरा होने के बाद वह बादशाह भी काबे से बाहर आ गया और बोला अब कुछ मांग लो। आलिम ने कहा कि दीन मॉगू या दुनिया। बादशाह कुछ देर खामोश रहा और बोला दुनिया मांग लो। आलिम ने कहा कि दुनिया तो आज तक मैने अपने रब से नहीं मांगी, तुम से क्या मांगूगा।

एक फकीर एक बादशाह के दरबार में गया और बोला अस्सलामु अलैकुम या जाहिद बादशाह बोला जाहिद तो आप है। फकीर ने कहा कि जाहिद वह होता है, जो बडी चीज को छोड कर छोटी चीज ले ले। इसलिए जाहिद तो आप ही है। मैं तो एक फकीर ही हूॅ।

‘‘गरीब लडका जो बादशाह बना‘‘

किसी मुल्क में एक बादशाह था। जिसकी हुकुमत बहुत दूर दूर तक फैली हुई थी। उसके दौर में चारों तरफ खुशहाली थी। उसी के यहॉ एक गरीब लडका था। जिसका नाम आलिम था। वह बहुत काबिल

और आलिम और जहीन था। किताबें पढने का उसे बहुत शौंक था। वह ख्वाब देखा करता था कि एक दिन मैं बादशाह बनुंगा। उसने अपनी मॉ से अपने ख्वाब का जिक्र किया। मॉ ने कहा कि बादशाह सिर्फ बादशाही खानदान से बनता है। एक गरीब आदमी बादशाह नहीं बन सकता। उस लडके ने कहा कि बादशाह भी तो हमारे जैसा इन्सान है। इसलिए बादशाह बनने का हक सबको है। वह अपने इस ख्वाब को सब लोगों से बताता था। उसके इस ख्वाब का चर्चा दूर दूर तक होने लगा। इसकी खबर बादशाह तक पहॅुच गई। बादशाह ने उस लडके को दरबार में बुलवा लिया और उसने पूछा कि तुम बादशाह क्यों बनना चाहते हो? उसने कहा कि मैं चाहता हॅू कि सबको बराबरी का हक मिले और कोई गरीब ना रहे। बादशाह ने कहा कि तुमको यह मालूम नहीं है कि बादशाह सिर्फ शाही खानदान से ही बनता है। उस लडके ने कहा कि मुझको मालूम है। मैने बहुत किताबे पढी है। आप भी मेरे जैसे इन्सान है और एक तरह ही पैदा हुये है। बादशाह ला जवाब हो गया। उसने कहा कि अच्छा मेरी चार शर्ते है। अगर तुम उनको पूरा कर दोगे तो मैं

तुमको बादशाह बना दूंगा। बादशाह ने यह बात भरे दरबार में कही।

उस लडके ने कहा बादशाह सलामत मै आपकी सब शर्ते पूरी करूंगा। आप अपनी शर्तो को पूछे। बादशाह ने कहा मेरे चार सवाल है, उनका जवाब तुमको देना है।

पहला सवाल एक खाली डब्बा है और उसके अन्दर एक और खाली डब्बा है और उसके अन्दर एक और मजबूत डब्बा है।

दूसरा सवाल एक सोने की तश्तरी है और उसमें दो गिलास रखे हुये है। एक में मीठा शर्बत है और दूसरे में जहर है।

तीसरा सवाल मेरी बेटी के पास दो गुडिये है। दोनों गुडियों के बीच में एक अगूंठी रखी है। इन तीनों के सही जवाब देने के बाद मेरी चौथी शर्त है कि तुमको एक बहुत खूबसूरत मिनार बनानी है।

लडके ने पहले सवाल का जवाब दिया कि आपका खजाना ज्यादा खर्चो की वजह से खाली हो चुका है।

दूसरे सवाल का जवाब है कि हुकुमत करने के लिए लोगों को प्यार से भी समझाना पडता है और सख्ती भी करनी पडती है।

तीसरे सवाल का जवाब यह है कि आपकी बेटी अब शादी की उम्र तक पहुॅच गई है। उसकी शादी कर देनी चाहिए।

बादशाह ने कहा कि तुमने तीन सवालों के जवाब तो सही दे दिये। अब तुमको मेरी चौथी शर्त पूरी करनी है। उस शर्त को तुम चाहे तीन दिन में पूरी करो या तीन महीने में या तीन साल में। अगर तुमने यह पूरी कर दी तो मैं तुमको शाही तख्त पर बैठा दूंगा। यह सुनकर लडके ने कहा कि अब मैं आपकी चौथी शर्त पूरी करने के लिए विदा लेता हूॅ।

यह शर्त जाकर उसने अपनी मॉ को बतायी। उसने कहा कि यह शर्त पूरी करना तुम्हारे बस की बात नहीं। वह लडका फिर अपने उस्ताद के पास गया और सारी बात बताई। उस्ताद ने कहा कि यह शर्त पूरी करना तुम्हारे अकेले के बस की बात नहीं है। उसके लिए तुम अपने दोस्तो और रिश्तेदारों से मदद लो। और बादशाह से जरा होशियार रहना। वोह शर्ते पूरी होने के

बाद भी आसनी से तुमको बादशाही तख्त पर नहीं बैठा देगा। यह सुनकर लडका चला गया। और अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से मिला। सबने उसकी मदद करने का वादा किया। क्योंकि वह भी दूसरों की मदद करता रहता था। इसलिए सब उसकी मदद करने को तैयार हो गये। सब लोगों ने उस मीनार को बनाने का काम शुरू कर दिया। जिससे जो मदद हो सकी, उसने वह की। और एक दिन आया कि वह मीनार बन कर तैयार हो गई। उसने तीन महीने के बाद जाकर बादशाह से बता दिया। बादशाह ने पूछा कि तुमने यह काम कैसे पूरा करा दिया। लडके ने कहा जब सब लोग हिम्मत और मिलकर काम करे तो अल्लाह उसकी मदद करता है। अब बादशाह उस मीनार को देखने के लिए उठ गया। उसने जाकर देखा तो मीनार उसकी मर्जी के मुताबिक बना था। बादशाह इतनी आसानी से उसको शाही तख्त देने वाला नहीं था। उसने एक तरकीब निकाली और कहा कि मैं एक दरबार लगाऊंगा। उसमें तुमको तख्त व ताज दे दूंगा। बादशाह ने सबको बुलाया और एक बहुत शानदार दावत का इन्तजाम किया। उस लडके को शाही तख्त पर अपने बराबर में बैठाया। अब उसके सामने दो प्याले रखे गये। एक

बादशाह का था और दूसरा उस लडके के लिए था। लडके के सामने वाले प्याले में बादशाह ने जहर मिला दिया था। जब प्याला उस लडके ने उठाया तो अपने उस्ताद की तरफ देखा उस उस्ताद ने इशारे से उस शर्बत को ना पिने का मशवरा दिया। उस लडके ने नजर बचाकर वो प्याला बदल दिया। बादशाह ने उसकी इस हरकत को देख लिया। अब उस लडके ने कहा कि इस दावत का आगाज हम बादशाह सलामत से शुरू करते है। अब सबसे पहले बादशाह सलामत इस प्याले का घूंट भरेगें। बादशाह अपनी ही चाल में फंस चुका था। उसने खडे होकर ऐलान किया कि मैं आज इस महफिल में अपनी बेटी की शादी, इस लडके से करता हूॅ। मेरे बाद यह लडका इस शाही तख्त व ताज का मालिक होगा। इस तरह एक गरीब लडका अपनी जहानत से मुल्क का बादशाह बन गया। और उसकी शादी भी शहजादी के साथ हो गई। जब कोई आदमी सच्ची लगन से किसी काम को करने का इरादा कर लेता है और उस पर अमल भी करता है तो अल्लाह ताला उसकी मेहनतों को ज़ाय नहीं करता।

''स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य''

स्वामी जी कानपुर के रहने वाले है। आठवीं कक्षा तक इन्होने अपनी शिक्षा कानपुर में ही पूरी की। उसके बाद ये इलाहाबाद आ गये और वहां पर सब्जी मण्डी के पास एक कमरा किराये पर ले लिया। वहां से जब ये स्कूल जाया करते थे। तो रास्ते में एक मस्जिद थी। जिसको टीले वाली मस्जिद कहते है। वहां से जब ये गुजरते थे तो वहां से नारा–ऐ–तकबीर अल्लाहु अकबर की आवाजे आती रहती थी। एक रोज वहां पर एक जलसा हुआ और उसमें भी नारा–ऐ–तकबीर अल्लाहु अकबर के नारे लग रहे थे। मैं यह समझा कि ये नारे लोगों को भडकाने वाले है। स्वामी कहते है कि मैं सोचने लगा कि ये कौम बहुत ही लडाकू कौम है। हर वक्त ये भडकाने वाले नारे ही लगाते रहते है। जब तक मुझको इस नारे का मतलब नहीं पता था। बाद में मालूम हुआ कि इसके मायने तो यह है कि अल्लाह बहुत बडा है या अल्लाह बहुत महान है। मैने हिन्दी तरजुमे का कुरान शरीफ खरीदा और उसको पढना शुरू किया। क्योंकि मेरा नजरिया(Mind Set) तो एक ही तरफ था। इसलिए मैने इसमें ऐसी आयते छांटी

जिनसे आतंकवाद का भाव आता था। और कई बार कुरान को पढा। मैने अपने नजरिया(Mind Set) के अनुसार एक किताब लिखी। जिसका Title था कि ''इस्लामिक आतंकवाद का इतिहास''। बाद में मेरे दिमाग में आया कि कहीं मैने कोई गलत तो धारणा ना बना ली हो। मैने फिर कुरान शरीफ को पढा। किसी भी ग्रन्थ को पढने के लिए मन और तन दोनों का पवित्र होना चाहिए। अब मैंने अपने मन को पवित्र करके कुरान शरीफ को पढा तो मुझको मालूम हुआ कि कुरान शरीफ तो आतंक के खिलाफ है। आप स0अ0 व सल्लम 13 साल मक्के में रहे और वोह अपने साथ 13 साल तक अहले कुरैश के जुल्म सहते रहे। उनके साथियो को मक्के की तपती रेत पर नंगा करके खिंचा गया। जिससे उनकी कमर पर छाले पड कर जख्म हो जाते थे। खुद रसूल अल्लाह स0अ0 व सल्लम को तायफ में जख्मी किया गया। उनके ऊपर जानवरों की ओज रखी गई। उनको जान से मारने की कोशिश की गई। लेकिन आप अपने साथियों को सब्र की तलकीन करते रहे। आप सब्र के सिवाय अपने साथियों को ओर किसी चीज की तालिम नहीं देते थे। जब जुल्म हद से ज्यादा बढ गया तो आपने अपने साथियों को मदीने की

हिजरत करने का हुकुम दिया। और कुछ दिनों के बाद आपने भी मदीने की हिजरत कर ली। लेकिन कुरैश ने वहां पर भी चैन ना लेने दिया। जब मैने कुरान शरीफ को और हुजूर स0अ0 व सल्लम की सीरत का पढा तो मुझको मालूम हुआ कि मैने पहले जा किताब लिखी। वह पवित्र मन से नहीं लिखी थी। मेरी मालूमात अधूरी थी। फिर इसके बाद मैने एक किताब और लिखी। ''कुरान जीने की एक कला'' जिसमें मैने अपनी पहली किताब का खंडन किया और मुझको इस्लाम के बारे में जो कुछ गलत फहमिया थी। वो दूर हो गई और पता चला कि वेद, उपनिषद व गीता में जो कुछ लिखा गया। वही कुरान शरीफ और हदीसों में भी लिखा गया है। इस किताब के अलावा भी मैने और किताबें लिखीं। ''इस्लाम एक परिचय'', ''सच्चाई को जानो'' और इस्लाम आतंक या आदर्श''।

''ला इलाहा इल्लाह''

अल्लाह के अलावा कोई अल्लाह या भगवान नहीं है।

ऋग्वेद मण्डल 1 सूत्र 7 मन्त्र 10 के अनुसार–

हे मनुष्यों तुमको अत्यन्त उचित है कि मुझ परमेश्वर को छोडकर उपासना करने योग्य किसी दूसरे देवा को मत मानों क्योंकि एक मुझको छोडकर कोई दूसरा ईश्वर नहीं है।

इस्लाम में एक ईश्वरवाद है। इस्लाम कहता है कि उसकी कोई तस्वीर नहीं है। उसका कोई बुत नहीं है। उसको देखा नहीं जा सकता, उसको छुआ नहीं जा सकता।

इनो उपनिषद खण्ड 6 श्लोक 6 में लिखा है–

उस परमेश्वर के शरीर और इन्द्रियां नहीं है। उसके समान अथवा उससे बढकर भी कोई नहीं है। उस परमेश्वर को इन आखों से नहीं देख सकते। बल्कि ऑखें उसकी सहायता से देखती है। उसी को तू परमेश्वर जान। तू जिस ईश्वर की प्रार्थना करता है, वह ईश्वर नहीं है।

इस प्रकार जिस तरह कुरान एक ईश्वरवाद की तालीम देता है। उसी प्रकार वेद और गीता भी एक ईश्वरवाद की शिक्षा देता है।

“ओम शान्ति शान्ति शान्ति“

परमेश्वर हम सबके दैहिक(आखरत के अजाब), दैविक(खुदाई आफत, आंधी व तूफान), भौतिक(दुनिया की जरूरतें) कष्टों को दूर करे।

“बिस्मिल्लाह अर रहमान निर रहीम“

अल्लाह के नाम से जो बहुत दयावान और कृपालु है।

अगर सब लोग अपने अपने धर्मो के बारे में अच्छी तरह जान ले तो सब आपसी गलत फहमिया दूर हो जायेगी। इसी की तालिम हजरत मुहम्मद स0अ0 व सल्लम ने कुरान शरीफ के द्वारा हम तक पहुॅचायी। जब हम एक ईश्वर को मानेगें लगेगें तो सारी लडाईयां खत्म हो जायेगी।

“बेईमान दुकानदार“

इस किस्से में एक बेईमान आदमी का किस्सा लिखा गया है। इससे मालूम होता है कि जब आदमी बेईमानी करता है तो उसको इस दुनिया में भी अपने किये का बदला मिलता है और आखरत में भी उसका हिसाब देना होगा। हमेशा हमको हर काम ईमानदारी से

करना चाहिए। बद्नियति आदमी को दुनिया और आखरत में नाकाम कर देती है। हुजूर स0अ0 सल्लम ने फरमाया कि मुसलमान कभी झूठा नहीं हो सकता।

एक शहर में एक फकीर था। वह एक जंगल में झोंपडी बना कर रहता था। सुबह ही एक प्याला और हाथ में लाठी लेकर, उस शहर की गली गली में मांगता हुआ फिरता था और शाम को अपनी झोंपडी में आकर लेट जाता था। वो आवाज लगाता था कि कभी झूठ मत बोलना। कभी बेईमानी ना करना। कभी किसी को धोखा मत देना।

एक रोज वह एक मकान के सामने ये आवाज लगाता हुआ गुज़र रहा था, तो उस मकान के मालिक ने उसको आवाज दी। वह आ गया। मकान मालिक ने कहा कि तुम्हारी कहानी बहुत दर्द भरी मालूम होती है। तुम अपनी कहानी सुनाओ। फकीर ने कहा आप मेरी दास्तान सुनकर क्या करोगे? तुम मुझको धक्के देकर निकाल दोगे। उस मकान मालिक ने कहा कि मैं ऐसा नहीं करूंगा।

यह सुनकर उस फकीर ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की। उसने बताया कि मैं एक शहर के मशहूर हीरे,

जवाहरात के सौदागर का बैटा हूँ। उसका काम बहुत बडा था। वो मुझको भी अपने साथ दुकान पर ले जाता था। और मुझको समझाता रहता था कि कभी बेईमानी ना करना । कभी किसी से धोखा मत देना। अपना काम हमेशा। दयानतदारी से करना। एक दिन ऐसा आया कि मेरा बाप बीमार हो गया। कुछ दिन बीमार रहने के बाद उसका इन्तकाल हो गया। अब मैं बेसहारा हो गया और कई दिन तक दुकान पर भी नहीं गया। उसके बाद मैने दुकान खोली। सभी पडौसी दुकानदार मेरे पास हमदर्दी को आये। मुझको दिलासा दिया और हर तरह की मदद का वादा किया। मैं अब रोजाना सुबह सवेरे ही सबसे पहले दुकान खोल लिया करता था। पुराने ग्राहक फिर मेरे पास आने लगे। और मेरा काम बहुत अच्छा चल गया। अब मुझको ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने की धुन हो गयी। और मैने हराम और हलाल की तमीज छोड दी और अपनी तिजोरियॉ भरने लगा।

एक दिन मैं सुबह ही जब दुकान पर आया तो फटे, पुराने कपडें पहने हुये एक आदमी मेरी दुकान पर आया। मैं समझा कि यह कोई मांगने वाला सुबह ही सुबह आ गया। मैने उससे सही तरह से बात नहीं की।

उसने कहा कि मैं मांगने वाला नहीं हूँ। मैं तो एक कीमती हीरा बेचने आया हूँ। यह कह कर उसने जेब से एक बहुत ही कीमती हीरा निकाला और मुझको दिखाया। मैने बहुत लापरवाही से उसे देखा और उस आदमी से कहा कि यह तो कोई कीमती हीरा नहीं है। वोह वाकई बहुत कीमती हीरा था। मगर मेरे दिल में बेईमानी आ गई थी। मैने उस हीरे को लापरवाही से उठा कर इधर उधर से देखा। और उसके ऐब गिनवाये। उसने कहा कि मुझको पैसों की जरूरत है। आप इसकी क्या कीमत देना चाहते है? मैने उसकी कीमत बीस दिनार लगाये। जबकि उसकी कीमत एक लाख सोने की अशरफियों से कम ना थी। उसने कहा आप जो देना चाहे दे दीजिए। वो बेचारा बीस दिनार लेकर चला गया। मैं बहुत खुश हुआ। आज तक मैने ऐसा हीरा नहीं देखा और दिल में सोचा कि आज तो मेरी लाटरी लग गई और अलमारी से एक हाथी दॉत की संदूकची निकाल कर उसमें वो हीरा रख दिया।

कुछ दिन के बाद एक घुडसवार मेरी दुकान के सामने आकर गिर गया। और वहीं पर मर गया। आसपास के लोग जमा हो गये। और मुझको उस घुड़सवार का कातिल समझने लगे। लोगों ने मेरी पिटाई

शुरू कर दी। कोतवाल भी आ गया। उसने भी मुझको मारा। वो कोतवाल भी मुझसे जलता था। क्योंकि मैंने उसके साथ भी अच्छा व्यवहार नहीं किया था। उस कोतवाल ने मुझको अदालत के सामने पेश कर दिया। मैने देखा कि वह हाकिम वही आदमी था। जिसको एक दिन मैने जलील करके अपनी दुकान से निकाला था। उस हाकिम ने घुडसवार के कत्ल के जुर्म में मुझे मौत की सजा सुना दी। और मुझको काल कोठरी में बन्द कर दिया। रात को वह हाकिम जो बहुत बेईमान था। मेरे पास कोठरी में आया। और सिपाहियों को भी उसने बाहर भेज दिया। उसने मुझसे कहा कि तुमने बहुत दौलत कमा रखी है। उसमें हमारा भी कुछ हिस्सा है या नहीं? मैने कहा कि आप जो चाहे मै देने के लिए तैयार हूॅ। उसने मेरे मुंह पर कपडा बांध दिया। और मेरे साथ दो सिपाहियों को भेजा और कहा कि दुकान पर जाकर इस थैले को सोने की अशरफियों से भर दो। मैंने ऐसा ही किया। सुबह को मेरे केस को दौबारा सुना गया। कुछ गवाहों के जरिए मेरे पक्ष में गवाही दिलवा दी और मुझको रिहा कर दिया।

अब मैं अपने इस नुकसान को पूरा करने के लिए और ज्यादा कमाने में लगा। और लोगों को ज्यादा

धोखा देने लगा और ज्यादा से ज्यादा उस नुकसान की भरपाई में लग गया।

कुछ दिन के बाद मेरी दुकान के सामने दो औरते आकर खडी हो गई। उनमें से एक औरत के पास एक छोटा सा बच्चा था। वोह आपस में बात कर रही थी। उनमें से एक औरत ने कहा कि कल जो हमने हाजी जलाल के यहां से जेवरात खरीदे थे। उसमें से ये आधे पैसे ले जाकर उसे दे देना। उसने दूसरी औरत को जेब में हाथ डालकर कुछ अशरफियां निकाल कर दे दीं और कहा कि ये अशरफियां हाजी जलाल को दे आओ। और कह देना बाकी पैसे में कल भिजवा दूंगी। कुछ देर के बाद दूसरी औरत एक मोतियों का हार लेकर आयी मेरे पास बैठी औरत ने कहा कि यह हार तो कुछ ज्यादा अच्छा नहीं है। मगर हाजी जलाल से हमारे पुराने ताल्लुक है। मैं इसको रख लेती हूॅ। मैने उनसे कहा कि मैं इससे बहुत अच्छे हीरे जवाहरात और जेवरात दिखा देता हूॅ। उन औरतों ने कहा कि अगर बहुत अच्छे हीरे जवाहरात हो तो दिखाओ। मैने यह जानकर कि बहुत बडा ग्राहक है, जो कीमती से कीमती हीरे जवाहरात थे। मैने अपने अलमारी से हाथी दॉत की सन्दूकची निकाली और उनको कीमती कीमती हीरे

जवाहरात दिखाये। उन्होने कहा कि हमारी बहन की दस दिन के बाद शादी है। यह जेवरात हम उसको दिखायेगें। अगर उसको पसंद आये तो हम आप से ले लेगे। उन जवाहरात में वो कीमती हीरा भी था। जो उसने उस गरीब आदमी से लिया था। उसमें से एक औरत ने कहा कि मैं यही पर बैठी हूॅ। ये दूसरी औरत घर पर मेरी बहन को यह जेवरात दिखा आयेगी। अगर ऐतबार ना हो तो किसी आदमी को साथ भेज दो। मैने वह संदूकची उसको दे दी। और बच्चा लिये हुये एक औरत मेरी दुकान में बैठी रही। कुछ देर के बाद मेरी दुकान के सामने दो आदमी आकर लडने लगें और तलवारें निकाल ली। लोग जमा हो गये। थोडी देर में कोतवाल भी वहां आ गया और उसने उनको हथकडियां डाल कर हाकिम की अदालत में पेश करने के लिए ले जाने लगा। और दो गवाहों को भी उसने साथ लिया। उसमें से एक मै भी था। मैने उससे उजर किया। मगर वो मुझको गवाही के लिए ले गया। मेरे बराबर में एक कसाई की दुकान थी। मैने उससे कहा कि मेरी दुकान में एक औरत बैठी है। तुम उस पर नजर रखना। यह कहकर वो कोतवाल के साथ चला गया। जब मैं लौटकर आया तो मैने देखा कि वह औरत वहां पर नहीं

थी। मैने उस कसाई से पूछा तो उसने बताया कि वह औरत अपने बच्चे को छोडकर यह कहकर चली गई कि मेरा बच्चा यहीं पर है। मैं हाजी जलाल की दुकान पर जा रही हूॅ। मैने हाजी जलाल की दुकान पर जाकर देखा। वहां पर कोई नहीं था। मैने बच्चे को देखा वह मिटटी का बना हुआ पुतला था। जिसको उन्होने कपडों में लपेटा हुआ था। मैने उस कसाई से कहा कि तुमने उसे क्यों जाने दिया। उसने कहा मैं तुम्हारा नौकर थोडा ही था। इस पर मेरी और उस कसाई की लडाई हो गई। मैं बावला सा हो गया और मैने उस कसाई को छूरी उठा कर मार दी। वह वहीं पर मर गया। मुझको पकड कर हाकिम की अदालत में पेश किया गया। हाकिम ने मुझको मौत की सजा दे दी। कुछ लोगों ने हाकिम से कहा कि यह तो पागल हो चुका। इसकी मौत की सजा माफ कर दी जाये और इसको शहर से निकाल दिया जाये। तब से मैं इस शहर में भीख मांगता हुआ फिर रहा हूॅ। और अपने किये की सजा भुगत रहा हूॅ।

अकले सलीम (संतुलित बुद्धि)
(Heart-Brain)

इसका मतलब है कि किसी चीज को सोचने समझने की सलाहियत। ये सोचने समझने की सलाहियत कुरान पाक में और आम तौर पर लोगों के मुताबिक दिल में होती है।

मौजूदा सांईस के मुताबिक डा0 ''आरमौर'' ने मालूम किया है कि दिल अपना एक छोटा दिमाग (Little Brain) रखता है। जिसको ''अन्दरूनी कलबी निजामे आसाब'' या Heart-Brain कहा जाता है। इसमें तकरीबन चालिस हजार असबी खुलय्ये (Neuron) होते है। जो दिमाग के खुलय्यों के जैसे होते है। दिमाग का वजन 1.5 कि0ग्रा0 होता है और इसमें 86 बिलियन न्यूरोनस और 85 बिलियन नॉन–न्यूरोनल Cells होते हैं।

दिमाग का पिछला हिस्सा जिसको (occiput) कहते है। जिसमें नजर, रंगों की पहचान और चेहरे की पहचान और यादाश्त का डेटा महफूज होता है।

कुरान शरीफ में है:–

''लहुम कलूबुन ला यफकहूना बिहा''(7–179)
तरजूमा– ''उनके दिल है जिससे वो समझते नहीं''

दिल बादशाह होता है और दिमाग उसका वजीर होता है। दिल के हुकुम को दिमाग अमल (follow) करता है। उसके पास पूरी जिम्मेदारियां होती है।

यादाश्त (Memories) सिर्फ दिमाग में ही जमा नहीं होती। बल्कि दिल में भी जमा होती है। दिल जजबात (Emotions) इच्छाएं (Desires) और हिकमत (Wisdom) का भी अपने पास खजाना जमा रखता है। Vagus Nerve अस्सी प्रतिशत मालूमात को दिमाग के सभी हिस्सों को भेजता है। दिल का अपना आसाबी निजाम होता है। और अपना दिमाग होता है। जिसको (Heart Brain) कहते है।

अल्लाह ने इन्सान को अकल से नवाजा है। दूसरे जानदारों में अकल इतनी कामिल (Perfect) नहीं होती। इन्सान को दिल बादशाह के तौर पर दिया है और दिमाग को उसका वजीर बनाया है।

इन्सान के जिस्म में इतना बडा न्यूरोन सिस्टम होता है। इसको अगर जोडा जाये तो यह हमारी जमीन के दो चक्करों के बराबर होगा। और कमाल इस निजाम में

यह होता है कि ये Insulated होता है। एक Nerve की खबर दूसरे को नहीं होती, यह कभी शार्ट–सर्किट नहीं होते। अगर हम अल्लाह का जिक्र कसरत से करते है तो दिमाग को अच्छे Message जाते है और दिमाग भी दिल के साथ मुनव्वर हो जाता है और गंदे ख्याल नहीं आते। दिल ही की समझ से दिमाग अच्छे फैसले करता है। अगर दिल को हम गंदे ख्यालों और बातों से भर देगें तो उसी के हिसाब से उसके नतीजे बरामद होगें।

आज तक सब लोग यही समझते रहे कि दिल का काम सिर्फ खून को पम्प करके जिस्म के सब आज़ा की परवरिश करना ही है। जिसको आज की सांईस की तहकीक ने बता दिया है कि दिल ही जिस्म के आज़ा को कन्ट्रोल करता है। अगर दिल जिसको Heart Brain कहा गया है, वो दिमाग को सही रास्ते पर नहीं लायेगा तो तमाम निजाम गडबडा जायेगें। दिल यानी बादशाह दिमाग यानी वजीर को जो हुकुम देता है, वही दिमाग करता है।

कुरान शरीफ में कहा गया है:–

‘‘अला बेजिक्रिल्लाही ततमइन्नल कूलूब’’

अल्लाह का जिक्र दिल का सकून है। अगर दिल अल्लाह के जिक्र से खाली होगा तो पूरा जिस्म बेचैन हो जायेगा और कोई भी काम सकून से नहीं होगा। जिक्र दिल को पाक साफ रखता है। जिससे दिमाग भी अच्छे फैसले करता है। अल्लाह ताला ने मॉ के रहम (Uterus) में सबसे पहले दिल को बनाया और उसके बाद दिमाग बनना शुरू होता है।

तमाम तखलीकी सलाहियते (Excutive Functions) को कन्ट्रोल करना जैसे जज़बात, गुस्सा, याददाश्त, आदात, अख़लाक़ (Good Qualities), शख्सियत (Personality), इलतजा (Request) करने की सलाहियत (Abilities) सवालों के जवाब व सवाल और किसी (Events) वाके का बयान करना और मसायल को हल करना वगैरा सब का ताल्लुक हमारे आगे के दिमाग (Frontal lobe) का होता है। इसी माथे को हम अल्लाह के सामने रगडते है। जिससे हम ऊपर दी गई खसूसियत को अपने अन्दर पैदा करने की अल्लाह से दुआ करते है और उसकी बडाई का इक़रार करते है और ग़लत बातें जो दिमाग में आती है। उनसे बचते है।

अल्लाह ताला हमको जिक्रूल्लाह की और नमाज पढने की तौफीक अता फरमायें–आमीन।

कुरान शरीफ के सूरा अलक़ 96 और आयत 15–16 में दिमाग के सामने वाले हिस्से यानी (Frontal lobe) के बारे में आया है कि अगर ये गलत बातों से बाज ना आया तो इसी माथे के बाल पकड कर खिंचा जायेगा। कुरान की (सूरा 96 आयत 16)। **कल्ला ला इल लम यनतही लानसफा अम बिन नासियाह**– ''हरगिज नहीं बाज ना आया तो (96–15)। हम उसके माथे के बाल पकड़ कर खिंचेगें।

नासियातिन काजिवतिन खातियाह (96–16)

उस पैशानी को जो झूठी और सख्त खताकार है। हदीस शरीफ में आया है– मैदाने हशर में सबसे पहले जो कत्ल किया गया था, वो कत्ल करने वाले को माथे के बालों को खिचता हुआ, अल्लाह के पास ले जायेगा और इन्साफ मांगेगा।

ये दिमाग का अगला हिस्सा (Frontal lobe) ही नेकी और बदी का जिम्मेंदार है।

''एक रहम दिल इन्सान''

एक रहम दिल और नेक आदमी था। उसका गुजारा बहुत अच्छा चल रहा था। उसने अपनी आमदनी से कुछ पैसे जमा कर लिए थे। उसने सोचा कि इस पैसे से मैं एक मकान खरीद लूँगा। उसको किराये पर दे दूंगा और बुढापे में गुजर बसर होता रहेगा। उसने एक Broker से बात की। उसने कुछ दिन बाद एक मकान के बारे में बताया। वह बहुत अच्छा मकान था। मैं उसको देखने के लिए गया तो उस Broker ने उस मकान को दिखाया। उसमें कई कमरे थे। जब मैं मकान देख रहा था तो देखा कि एक औरत एक कमरे में बैठी रो रही है। मैंने Broker से पूछा कि यह औरत कौन है? उसने बताया कि एक बेवा औरत है। जब उसके शोहर का इन्तकाल हुआ तो उसको पता चला कि उसके एक और बीवी भी थी। वह भी मकान का हिस्सा लेने के लिए आ गई है। अब यह औरत सोच रही है कि मकान बिकने के बाद मेरा क्या होगा? मैं इन यतीम बच्चों को लेकर कहां जाऊंगी। खैर उस मकान का सौदा हो गया और उस औरत से वादा किया गया कि तुम्हारे हिस्से की रकम तुमको दे दी जायेगी। अगले

दिन उस आदमी ने मकान के पैसे अदा कर दिये। अब मकान लेने वाला आदमी अगले दिन अपने नये मकान पर गया। उसने उस बेवा औरत से कहा कि मैने उस दूसरी बीवी के हिस्से की रकम उसको दे दी और यह मकान मैने तुम्हारे ही नाम कर दिया। मकान के कागजात उसने उस बेवा औरत को दे दिये।

किसी के ऊपर रहम करना, एक बहुत बडी बात है। कहा गया है कि तुम जमीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम फरमायेगा। जब भूखों को खाना खिलाने और प्यासों को पानी पिला देने पर और किसी जानवर पर रहम करने पर अल्लाह जन्नत अता फरमा देता है, तो किसी बेआसरा को आसरा दे देने वाला जन्नत से महरूम हो जाये, ये मुमकिन नहीं अल्लाह तो ग़फ़ूररूर रहीम है, वह तो मगफरत करने के बहाने ढूढता है।

''मॉ से मुहब्बत''

एक बेवा औरत का एक लड़का था। वह बेवा औरत लोगों के यहां काम करके अपना और अपने उस एकलौते बेटे का गुजर बसर कर रही थी। उसका यह लडका एक स्कूल में पढ रहा था। मगर रोजाना अपने कपडे मैले किये हुये देर से घर आता था। उसका

रोजाना का यह मामूल था। उसकी मॉ उसकी इस हरकत पर रोजाना उसकी पिटाई करती थी। इसका इल्म उसके मुहल्ले वालों को भी था, कि यह लडका रोजाना अपनी मॉ से पिटता है। मगर कुछ बोलता नहीं। यही काम उसके साथ स्कूल में भी होता था। वह रोजाना अपने स्कूल में देर से जाया करता था और वहां पर भी उसकी पिटाई हुआ करती थी।

एक रोज उसके पडोस का एक नेक आदमी सब्जी मण्डी सब्जी खरीदने के लिए गया, तो उसने छुप कर देखा कि वह लडका गाडियां लोड होते हुये जो सब्जियां नीचे गिर जाती है। उनको इकट्ठा करके एक थैले में जमा कर रहा है। उस सब्जी को वह एक कोने में बैठ कर बेच देता है। उस आदमी को उसकी मॉ ने बताया था कि यह रोजाना स्कूल में भी देर से पहुॅचता है और वहां पर भी उसकी रोजाना पिटाई होती है।

उस नेक आदमी ने एक दिन उस लडके की मॉ और उसके टीचर को उस सब्जी मण्डी में बुलाया और कहा कि तुम छुप कर देखो यह बच्चा क्यों रोजाना अपने स्कूल और घर देर से पहुॅचता है। वें दोनों सब्जी मण्डी आ गये और देखा कि यह लडका क्या कर रहा है।

अब उस नेक आदमी ने उस लडके से पूछा कि तुम रोजाना दोनों जगह क्यों पिटते हो? और तुम रोजाना यह काम क्यूँ करते हो? यह पूछने पर वह लडका रोने लगा और बोला मेरी मॉ दूसरों के घर काम करने जाती है। इसके कपडे फटे हुए होते है। मुझको शर्म आती है कि मेरी मॉ इन फटे–पुराने कपडे पहन कर लोगों के यहां काम करे। मै इस सब्जी को बेच कर अपनी मॉ के लिए कपडों के पैसे जमा कर रहा हूँ।

यह बात उस नेक आदमी ने उसकी मॉ और उसके टीचर से बता दी। अगले दिन जब वह लडका स्कूल देर से पहुँचा तो उसने अपने टीचर के सामने पिटने के लिए हाथ फैला दिया। मगर यह देख कर उसे ताज्जुब हुआ कि आज उसकी पिटाई नहीं हुई। बल्कि उसके टीचर ने उसे गले से लगा लिया और उस लडके से माफी भी मांगी। शाम को जब वह अपने घर पहुँचा तो उसकी मॉ ने भी उसको गले लगा लिया और बहुत रोयी।

जब तक किसी काम की सच्चाई को ना जान ले। उस वक्त तक कोई फैसला कर लेना बहुत गलत होता है। हो सकता है कि जो वह देख रहा है, वह गलत हो और जो कुछ वह सुन रहा हो, वह गलत हो।

गलत फहमियों से बडे–बडे काम बिगड जाते है। जब तहकीक के बाद उसकी सच्चाई पता चलती हैतो फिर पछताना पडता है। इसीलिए बद गुमानी को बहुत बडा गुनाह बताया गया है। अल्लाह ताला हम सबको बद गुमानी से बचाये।

‘‘तोते ने मालिक को पहचाना’’

एक खबर इन्कलाब उर्दू अखबार में 19 दिसम्बर 2022 में छपी।

कमला नगर– आगरा के एक तोते ने दो फरीकों का फैसला करा दिया। एक परिन्दे के जरिये दो फरीकों का झगडा खत्म हो गया। बलकेशवर का रहने वाला एक आदमी तीन साल से एक गैर मुल्कि तोते को पाल रहा था। वह तोता उसके दोस्त ने उसको दिया था। सभी घर वाले उस तोते को प्यार करते थे। एक रोज जिस आदमी ने वह तोता दिया था, वह उसे वापस लेने आ गया। जिसके पास वह तोता था, उसने तोता देने से इन्कार कर दिया। इस पर दोनों का आपस में झगडा होने लगा। मामला पुलिस थाने तक पहुँच गया। पुलिस दोनों फरीकों को और तोते के पिंजरे को थाने ले आई। कई घण्टों तक पुलिस यह फैसला ना कर

सकी कि तोता किस को दिया जाये। तोते पर झगडें की कहानी बडे पुलिस अफसर तक पहुॅच गई। बडे आफिसर ने थाना इन्चार्ज विपिन कुमार गोतम को आइडिया दिया कि तोते को जिस फरीक से लगाव होगा, तोता उस फरीक को दे दिया जाये। तोते को पिंजरे से निकाल कर मेज पर छोड दिया गया। दोनों ग्रुपों में मारपीट शुरू हो गई। तोता मम्मी–पापा कहते हुये तीन साल से पालने वालों के पास चला गया। इसके बाद तोते को उनको दे दिया गया और एक तोते ने दोनों फरीकों का फैसला करा दिया।

''बादशाह हारून रशीद का बेटा''

यह लडका बहुत इबादत गुजार और अल्लाह वाला था। वह एक बहुत बडा आलिम था। एक रोज वह हारून रशीद के दरबार में आया, जो एक मामूली से कपडे पहने हुए था। सर पर एक मामूली सा कपडा बन्धा हुआ था। बादशाह के दरबार में बहुत से उमरा बैठे हुये थे। वह आपस में बाते करने लगे कि इस लडके ने बादशाह को रूसवा कर दिया। अगर बादशाह इस पर सख्ती करे तो यह लडका राहे रास्त पर आ सकता है। यह सुन कर बादशाह हारून रशीद अपने लडके की

तरफ मुतवज्जे हुआ और उसको समझाने लगा। उसने अपने वालिद से तो कुछ ना कहा, एक पेड पर बैठे हुये परिन्दे को उसने आवाज दी। वह आकर लडके के हाथ पर बैठ गया। फिर उसको कहा कि अपनी जगह पर चला जा। वा परिन्दा उड कर फिर अपनी जगह पर जाकर बैठ गया। लडके ने कहा कि अब्बाजान आपने दुनिया को अपना नसबुल ऐन बना लिया। वह लडका घर पर गया और अपनी वाल्दा से मिला। उसकी मॉ ने उसको एक हीरे की अगूंठी दी और एक कुरान शरीफ दिया। यह लेकर वह लडका घर से निकल गया और बहुत दूर बसरा शहर में जाकर रहने लगा और वहॉ पर मजदूरी करता रहा। एक दिन वह सडक पर बैठा कुरान शरीफ पढ रहा था। वह हफ्ता में एक दिन काम करता और एक दरहम और दरहम का छटा हिस्सा मजदूरी लेता। वह इससे कम या इससे ज्यादा मजदूरी नहीं लेता। एक रोज अबु आमिर रहमतुल्ला अलैही को एक मजदूर की जरूरत थी। उनको किसी ने बताया कि एक लडका है जो गारा मिट्टी का काम करता है। अबु आमिर ने देखा कि सडक के किनारे एक लडका बैठा कुरान शरीफ पढ रहा है। अबु अमिर ने पूछा कि लडके मजदूरी करोगे तो उसने जवाब दिया कि क्यों

नहीं करूंगा? मगर मेरी शर्त है कि मैं एक दरहम और उसका छटा हिस्सा मजदूरी लूंगा और नमाज के वक्त नमाज पढने चला जाऊंगा। अबु आमिर ने दोनों शर्ते मंजूर कर ली। शाम को अबु आमिर ने देखा कि इस लडके ने दस आदमियों के बराबर काम किया। इससे खुश होकर उन्होने उसको दो दरहम मजदूरी के दिये। उस लडके ने एक दरहम लौटा दिया और कहा कि मैं एक दरहम और उसके छटे हिस्से से ज्यादा मजदूरी नहीं लूँगा। मजदूरी लेकर वह चला गया। अगले हफ्ते मैं फिर मजदूर की तलाश में निकला तो वह लडका वही पर बैठा हुआ मिला। मैं उसको काम पर ले गया। मैंने छुप कर देखा कि देखूं यह लडका किस तरह काम करता है। मैने देखा कि वह दीवार पर गारा डालता है और ईटें खुदबाखुद उस पर लग जाती है। उस रोज मैंने उसे तीन दरहम देने चाहे। मगर उसने अपनी तय मजदूरी ही ली और चला गया। मैं फिर तीसरे दिन मजदूर की तलाश में निकला। मगर वह लडका नहीं मिला। मैने लोगों से उसके बारे में पूछा तो उन्होने बताया कि वह लडका हफ्ते में एक ही दिन काम करता है। मगर आज वह बीमार है। मैं उस आदमी को लेकर उस लडके की तलाश में निकला तो देखा कि

वह जंगल में बेहोश पडा है और उसके सर के नीचे एक ईंट रखी हुई है। मैने उसका सर अपनी गोद में रखा तब उस लड़के ने आखें खोली और कहा के यह कुरान शरीफ और अगूंठी तुम बगदाद जाकर बादशाह हारून रशीद को दे देना और कहना कि यह एक परदेसी लडके की अमानत है और कहना कि कही ऐसा ना हो कि इसी गफलत की हालत में मेरी मौत हो जायें और तुम मुझको नहला–धुलाकर मेरे इन्ही कपडों में कफन दे देना। मैने कहा मेरे दोस्त क्या मै तुझको नये कपडो में कफन ना दे दूं। उसने कहा कि नये कपडों के हकदार जिन्दा लोग है। यही जवाब हजरत अबुबकर ने अपनी वफात के वक्त दिया था। मैने उसको नहला कर उन्ही कपडों में उसको कफन देकर दफना दिया और फिर मै। उसकी अमानत लेकर बगदाद गया। उस वक्त बादशाह हारून रशीद की सवारी निकल रही थी। सैकडों घोड़े उसके साथ थे। मैने आवाज देकर कहा कि बादशाह सलामत आपकी एक अमानत मेरे पास है। आपको हजूर स0अ0 सल्लम की कराबत का वास्ता मेरी बात सुन ले। यह तुम्हारे बेटे की अमानत मेरे पास है। बादशाह ने कहा कि तुम मेरे उस बेटे को जानते हो मैने कहा कि जानता हूॅ। बादशाह ने पूछा कि वह क्या

काम करता था? मैने कहा कि वह गारे मिटटी का काम था। बादशाह ने पूछा कि तुमने भी उससे कोई काम कराया। अबुआमिर ने कहा कि मेरे यहां उसने दो दिन मजदूरी की। बादशाह ने कहा कि ऐ अबु आमिर तुमको यह ख्याल नहीं आया कि उसका हुजूर स0अ0 सल्लम से कराबत थी। वह हजूर स0अ0 सल्लम के चचा हजरत अब्बास की औलाद में से था। बादशाह ने पूछा कि तुमने उससे काम कराया और उसको तुमने अपने हाथों से कफन व दफन किया। अबु आमिर ने कहा हॉ। बादशाह ने मेरा हाथ लिया और अपने सीने पर रख लिया। उस रात में मैने ख्वाब देखा कि चारों तरफ रोशनी ही रोशनी फैली हुई थी और वह लडका वहां पर बडे ठाठ बाट के साथ बैठा है। मैने पूछा कि आपके साथ अल्लाह ने क्या सलूक किया। उसने कहा कि अल्लाह ताला ने मुझको उन दौलतो से नवाजा जो किसी आदमी ने ना देखी होगी और ना महसूस की होगी।

हारून रशीद एक बहुत दीनदार बादशाह था। वह रात में 100 रकत नफलें पढता था और 100 दिनार रोजाना अल्लाह के लिए खैरात करता था। साल में एक हज करता और सौ आदमियों को साथ ले जाता और एक

साल जिहाद में रहता था और जिस साल को वो हज को ना जाता, उस साल तीन सौ लोगों को अपने खर्चे से हज कराता था।

''एक फर्स्ट ग्रेड सेक्रेटरी का वाकिया''

पाकिस्तान में एक मिनिस्टरी ऑफ फाईनेन्स में सेक्रेटरी थे। उन्होने बहुत पैसा कमाया था और Swiss बैंक में भी उन्होने नम्बर दो का पैसा जमा किया हुआ था। उन्होने एक कालोनी में मकान बनाया। इत्तेफाक से उनके मकान के थोडी ही दूरी पर एक मस्जिद थी। एक दिन जब सुबह की आजान हुई तो इन साहब की ऑख खुल गई। इन्होने उस मस्जिद के मौज़्ज़न को बुलाया और कहा कि कल से तुम लाउडस्पीकर से आजान नहीं दोगे। मेरी ऑख खुल जाती है। और फिर मुझको नींद नहीं आती। ये क्योकि एक बहुत बडे ओहदे पर फायज थे। उस मौज़्ज़न को इनकी बात माननी पडी। अगले दिन उसने लाउडस्पीकर से आजान नहीं दी। लोग मौज़्ज़न पर नाराज हुए। और उनसे लाउडस्पीकर पर आजान ना देने की वजह पूछी उसने वजह बतायी कि सेक्रेटरी साहब की सुबह की नींद खराब होती है। सब कालोनी के लोग मिलकर उनके

पास गये। मगर वह अपने ओहदे के गुरूर में नहीं माने। लोग बेचारे उनके रौब की वजह से चुप हो गये।

अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि कुछ दिन के बाद उनको फालिज का असर हो गया। वह बीमार होकर लेट गये। कॉफी दिन जब ये अपने दफतर नहीं गये तो इनको रिटायरमैंट दे दिया गया। अब ये मुस्तकिल बिस्तर पर ही पडे रहते थे। क्योंकि मिजाज आफिसराना था। तो ये घरवालो को भी धमकाते रहते थे। यहां तक के ये अपनी बीवी और बच्चों को भी गालियां देते थे। जब घर के सब लोग आजिज आ गये तो बीवी ने अपने मायके जाने का फैसला किया। और वह बच्चों को भी साथ ले गई। अब ये घर पर अकेले पडे रहते थे। पास ही उनके भाई का मकान था। वो उनको अपने घर ले गये। क्योंकि इनके हाथ पैर जवाब दे चुके थे। वे इनको अपने हाथ से खाना खिलाया करते थे। अब इन्होने यहां आकर भी अपने आफिसराना अंदाज नहीं बदले और अपनी भाभी और बच्चों को भी गालियां देने लगे। सब लोग बहुत तंग आ गये। समझाने के बाद भी उनके तेवर नहीं बदले। तंग आकर उनके भाई की बीवी ने कहा कि आप या तो घर में इनको रख लें या फिर हमको। आपको इन्हे घर से

निकालना होगा। एक दिन जब मामला हद से ज्यादा बिगड गया तो उनकी चारपाई घर से बाहर निकाल कर रख दी। अब वे भूखे प्यासे बाहर पडे रहते। और अल्लाह के वास्ते खाना मांगने लगे। जिस अल्लाह के नाम से ये इस हालत में पहुँचे थे। अब उसी अल्लाह के नाम से ये मांगने लगे। आते जाते कुछ लोग उनके पलंग पर पैसे डाल देते थे। वो कहते थे मैं पैसों का क्या करूंगा? मुझको तो खाना चाहिए। किसी अल्लाह के बन्दे ने होटल से उनको खाना ला दिया मगर यह तो हाथ और पैरों से माजूर हो चुके थे। खाना कैसे खाते लोगों से कहते ये खाना मुझको खिला दो। लोग यह कहकर गुजर जाते कि हमारे पास इतना वक्त नहीं है कि हम आपको बैठकर खाना खिलाये। अब वह बेचारा पैर के अगूंठे से रोटी पकडता और खा लिया करता। इसी हालत में उसकी मौत आ गई। और इतने बडे ओहदे पर रहने वाले आदमी को इस कसमपुरसी की हालत से गुजरना पडा।

इन्सान को कभी भी अपनी दौलत या ओहदे पर गुरूर नहीं करना चाहिए। ना जाने कब अल्लाह ताला को उसको इसी दुनिया में इस आदमी जैसा अन्जाम भुगतना पडे। अल्लाह से हर हाल में डरते रहना चाहिए

और ना उसकी दी हुई दौलत, शौहरत, सेहत और औलाद जो उसकी अता की हुई है, उस पर गुरूर करना चाहिए और उसका शुक्र अदा करते रहना चाहिए। अल्लाह किसी को भी ऐसी हालत से ना गुजारे। गुरूर, तकब्बुर और हसद आदमी को दोनों जहानों में जलील कर देता है।

DR. ROSHAN JHAN

(MBBS, MD)

अगर आदमी में हौसला और साबित क़दमी (Persistency) हो। वह हर मुश्किल में कामयाबी से हमकिनार हो जाता है। अगर आदमी सब्र और शुक्र का दामन थाम ले तो कितनी भी मुश्किल पेश आ जाये वह उसको हल कर लेता है। ऐसा ही वाकिया एक गरीब लडकी डा0 रोशन जहां के साथ पेश आया।

डा0 रोशन जहां एक गरीब खानदान की लडकी है। इसके वालिद एक सब्जी की रेहडी लगाते थे। उनकी वालिदा दूसरों के घरों पर काम करती थी। इनकी तीन बहने और एक भाई है। लेकिन इनके वालिदेन ने सब बच्चों की पढाई पर ध्यान दिया। रोशन जहां भी रोजाना बोम्बे में लोकल ट्रेन से सफर करके

स्कूल जाया करती थी। एक रोज जब वह स्कूल से घर वापिस आ रही थी, तो जब वह स्टेशन के करीब आ जाने की वजह से गेट के पास आकर खडी हो गई। कुछ ऐसा वाकिया पेश आया कि वह गेट से नीचे गिरी और बारह डिब्बों की ट्रेन उसकी टांगों के ऊपर से गुजर गई। किसी ने भी चैन खिचनें की कोशिश नहीं की और आधे घण्टे तक वह रेलवे ट्रैक पर पडी रही। फिर कुछ लोग आये। उस लडकी के पास मोबाईल फोन भी नहीं था। उसकी डायरी में उसके घर का फोन नम्बर था। वह लोगों से इलतजा करती रही कि कोई उसके घर पर फोन कर दे। मगर किसी ने फोन करने की जहमत गवारा ना की कुछ देर बाद रेलवे पुलिस आई और उसको सरकारी अस्पताल में दाखिल करा दिया। वह उस वक्त 11th Standred के 1st Semester का इम्तेहान दे रही थी। यह वाकिया 7th Oct 2008 में पेश आया। यह लडकी सुबह 11 बजे सरकारी अस्पताल में दाखिल हुई। मगर शाम 6 बजे तक उसकी किसी ने खबर नहीं ली। फिर उसके अम्मी अब्बा आये और उन्होने उसको प्राइवेट अस्पताल में दाखिल किया। उसकी दोनों टांगें कट चुकी थी। बायीं टांग घुटने के ऊपर से तथा और दाहिनी टांग घुटने से

नीचे तक कट गई थी। तकरीबन ढाई महीने तक वह अस्पताल में दाखिल रहीं। उसको मसनूई(Artificial) टांगे लगाई गई। लोग कहते थे कि यह लडकी तो अब कुछ नहीं कर सकती। यह बेचारे गरीब मॉ–बाप पर बोझ बन जायेगी। वें सब बाते लोगों से सुनती और अल्लाह से शिकायत करती कि एय अल्लाह तूने मुझको जिंदा क्यों रखा। इस जिन्दगी से अच्छा था कि तू मुझको मार देता। वह अपनी सरगुज़शिश्त (Narrative) सुनाते हुए बताती है कि मेरी अम्मी ने मेरी हिम्मत बन्धाई कि अल्लाह ने तेरी दो टांगे ही काटी है। तुमको दो हाथ दिये है और दो आंखे दी है। कुछ करने के लिए उसने तुझको जिंदा रखा है। तू एक दिन जरूर अपनी मंजिल को पा लेगी। मुझको शुरू से ही डॉक्टर बनने का शौंक था। मैने अपनी पढायी शुरू कर दी। मेरे अब्बा ने मुझको किताबे ला दी। मगर मुझको गाइड करने वाला कोई नहीं था। मैं खुद ही अपनी पढाई करती थी। अल्लाह ने मुझको बारहवीं कक्षा में फर्स्ट डिविजन से पास कर दिया। उसके बाद मैंने मैडिकल का टैस्ट दिया और उसमें मैंने 3rd रैंक हासिल किया। अब मैंने MBBS में दाखिले के लिए अप्लाई किया। मगर मैडिकल कॉलेज ने मुझको

दाखिला देने से इन्कार कर दिया। क्योंकि मैं 89 प्रतिशत मुहताज हो चुकी थी। मैडिकल कॉलेज के रूल के मुताबिक सिर्फ 70 प्रतिशत तक मुहताज ही दाखिले के अहल करार दिये जाते है। मुझको दाखिले से इन्कार कर दिया। मगर एक डॉक्टर ने मुझको राय दी कि तुम्हारे सामने एक रास्ता है। तुम मुम्बई हाईकोर्ट में अपनी केस दायर कर दो। तुमको इन्शाल्लाह वहां से रिलीफ मिल जायेगी। मैने हिम्मत नहीं हारी और मुम्बई हाईकोर्ट में अपना केस दायर कर दिया। वहां पर मेरा केस सुना गया। एक दिन फैसले का आ गया और चीफ जस्टिस ने अल्लाह के हुकुम से मेरे ऊपर रहम खाया और मेरे हक में फैसला सुना दिया। इस तरह मेरा दाखिला सन 2011 में MBBS में हो गया। साढे पॉच साल मैने बडी मुश्किल से गुजारे। मेरे डिपार्टमैंट बहुत दूर थे। टांगों में बेहद दर्द हो जाया करता था। मैं अपनी क्लास में भी दस पंद्रह मिनट देर से पहुंचती थी। लेकिन अल्लाह का शुक्र और अहसान है कि उसने यह वक्त भी पूरा करा दिया और मैं 4th रैंक से MBBS में पास हो गई। लेकिन यहां पर मेरा गोल पूरा नहीं हआ था। मैंने MD के लिए भी अप्लाई कर दिया। वहां पर फिर उन्ही वजुहात की बिना पर यह कह कर

मुझको दाखिला देने से इन्कार कर दिया और कहा कि जब तक पिछला 70 प्रतिशत माजूरी वाला कानून नहीं हटेगा। तब तक हम दाखिला देने से मजबूर है। मैने वहां के M.P. से राब्ता(Contact) कायम किया। दाखिले की तारीख में सिर्फ 2 दिन बाकी थे। वह M.P. मेरे लिये जहाज से दिल्ली गये और उस वक्त के हैल्थ मिनिस्टर से मेरी सारी कहानी सुनाई। उन्होने उस पर गौर करने का वायदा किया कि मैं इस कानून को खत्म कर दूंगा। दाखिले से एक दिन पहले J.P. Naddha Minister of Health का मेरे पास फोन आया और उन्होने बताया कि तुम्हारी दरख्वास्त मेरी टेबल पर है और उस कानून को बदल दिया गया है। तुम्हारा दाखिला एक मशहूर Medical College K.G.S. Bombey में हो गया है। मैं तीन साल बाद MD में चौथे रैंक के साथ कामयाब हो गई।

इरादे जिनके पुख्ता हो यकीं जिनका हक पर हो,
तलातुम खेज मौजों से वोह कभी घबराया नहीं करते।

जब आदमी किसी काम को करने की ठान लेता है और उसका भरोसा अल्लाह पर कामिल दर्जे का हो तो वह अपनी मंजिल को जरूर हासिल कर लेता है। मगर अल्लाह पर पक्का यकीन हो तो उस गोल को हासिल

करने के लिए वह जद्दोजुहद करे तो अल्लाह उसकी जरूर सुनता है। लेकिन आदमी को कुछ इम्तेहानों से जरूर गुजरना पडता है।

यकीं कामिल अमल पैहम जिन्दगी फातेहै आलम,
जिहादे जिन्दगानी में है यह मर्दो की शमशीरें।

अल्लामा इकबाल़

आज डॉ0 रोशन जहां M.D. एक मशहूर और कामयाब पैथोलोजिस्ट है।

''अल्लाह की नेमते''

हम अगर अल्लाह की नेमतों का शुमार करें तो हम उनका शुमार भी नहीं कर सकते।

अगर हम अपने जिस्म में ही देखें तो इतनी बेशुमार नेमते है। जिनका तसव्वुर भी महाल है। अल्लाह ने हमको आंखे दी है। जिसके बैगर हम उसकी दी हुई बेशुमार नेमतों को देखते है। उसने हमको कान दिये जिससे हम सुनते है। अगर हम सुनना सके तो सुनने की नेमत से महरूम हो जायेगे। उसने हमको जुबान दी। जिससे हम बोलते है और दुनिया भर के जायको का मजा ले सकते है। हाथ दिये, पैर दिये सबसे बडी

चीज दिमाग पूरी सलाहियतों के साथ दिया। जिससे हम सोच सकते है। नई नई चीजों के बारे में खोज कर सकते है। जितनी कामिल अकल इन्सान को दी है उतनी कामिल अकल किसी और हैवान को नहीं दी।

अल्लाह ने ऐसे ऐसे आजा दिये जिनके बैगर हम कुछ मिनट भी जिंदा नहीं रह सकते। दिल दिया जो एक मिनट में एक नौजवान आदमी में 72 बार और एक दिन में एक लाख बार धडकता है और एक साल में 360 लाख बार धडकता है और एक मिनट में 5 लीटर और एक दिन में सात हजार लीटर और पूरी जिन्दगी में लगभग 16 करोड लीटर खून पम्प करता है। जो पूरे जिस्म को ग़िज़ा मुहयया करता है। अगर दिल अपना काम बन्द कर दे तो हम एक मिनट भी जिंदा नहीं रह सकते। हमारे फेफडे एक मिनट में 12 से 16 बार सांस लेते है। और 5 से 6 लीटर ऑक्सीजन को इस्तेमाल करते है। फेफड़े पूरे दिन में 21600 बार सांस लेते ओर छोडते है और एक मिनट में 5 लीटर खून को ऑक्सीजन देते है। फेफड़े एक दिन में 11000 लीटर हवा लेते और छोडते हैं। पॉच प्रतिशत ऑक्सीजन फैफड़े ले लेते है और 15 प्रतिशत बाहर निकाल देते

है। हर रोज जिस्म में 550 लीटर ऑक्सीजन की खपत होती है।

एक आदमी औसत रूप में एक मिनट में 6 लीटर हवा सांस के रूप में लेता है और एक घण्टे में 360 लीटर और 24 घण्टों में 8700 लीटर हवा लेता है। क्योंकि हवा में 20 प्रतिशत ऑक्सीजन होती है। इसलिए एक दिन में 1750 लीटर ऑक्सीजन की जरूरत होती है। इन्सान के अन्दर 99 प्रतिशत ऑक्सीजन होनी चाहिए। अगर यह 96 प्रतिशत से कम हो जाये तो आदमी Hypoxia का शिकार हो जाता है। कुल जमीन का 33 प्रतिशत भाग में जंगल होना चाहिए। एक पेड लगभग 8 से 11 टन ऑक्सीजन देता है और 12.6 टन कार्बन डाई ऑक्साइड लेता है। एक पेड से 20 से 25 आदमियों को ऑक्सीजन मिल सकती है। शरीर में 95 प्रतिशत से कम ऑक्सीजन किसी बीमारी का संकेत देती है।

कुछ चीजें अल्लाह ने दी है, वो भी नेमत है और कुछ चीजें अल्लाह ने नहीं दी, वो भी नेमत है।

एक आदमी का वाकिया मैने पढा है। वो कभी लेट कर नहीं सो सकता था। वो हमेशा तकिया कमर से लगाकर बैठ कर सोया करता था। मालूम हुआ कि

उसका Osophygeal Sphincter Properly काम नहीं करता था। अगर वो लेट जाता था तो उसके मैदे से खाना उसके मुंह में वापस आ जाता था। एक छोटे से आजा के खराब हो जाने से वो सारी उम्र के लिए इस मुसीबत में मुबतला हो गया।

एक औरत कभी भी Solid चीजें नहीं खा सकती थी। वो हमेशा Liquid खाना ही लिया करती थी। उसके मैदे में जख्म Gastric Ulcer था। जो बहुत सी दवाई लेने के बाद भी ठीक नहीं हुआ था। वो दूसरों के लिए अच्छे अच्छे खाने बनाया करती थी। मगर वो खुद इन नेमतों से महरूम थी। अगर मैदे और छोटी आंत के बीच जो वाल्व होता है, जिसको Pylorus valve कहते है। जो बन्द हो जाये तो खाना छोटी आंतो तक नहीं पहुँचता। इसका इलाज सिर्फ ऑपरेशन से ही मुमकिन है।

अल्लाह ने हमको अकल से नवाजा है और कामिल अकल दी है। जिससे हमको अशरफुल मखलूकात कहा गया है। अगर अकल अल्लाह छीन ले तो आदमी पागल कहलाता है और दर दर की ठोकरें

खाता हुआ फिरने लगता है। जब हम दुआ मांगे तो अल्लाह से अकले सलीम की दुआ मांगनी चाहिए।

इल्ला मन आता अल्लाह बिक़लबिन सलीम(26—89)

जिस दिन ना माल काम आयेगा और ना औलाद। मगर वोह जो अल्लाह के पास कलबे सलीम लेकर आये। कलबे सलीम से मुराद कल्ब सही या पाक दिल है। यानी वो दिल जो शिर्ख निफाक और हसद बुग़ज़ के जजबात से पाक हो।

खुवाजा कुतबुद्दीन बखतियार काकी र0अ0

खुवाजा बखतियार काकी र0अ0 एक बहुत बडे बुजुर्ग थे। उनकी वालिदा भी एक बहुत दीन दार औरत थी। इनकी वालिदा ने इनको बचपन से ही तवकलतुअलल्लाह की तालिम और तरबियत दी थी। इनकी वालिदा ने इनको सिखाया था कि हर चीज अल्लाह से ही मांगनी चाहिए। हमको खाना भी अल्लाह ही देता है।

जब ये कुछ बडे हुए तो इनको मदरसे भेजना शूरू कर दिया था। जब ये मदरसे से वापस आते तो इनको भूख लगी होती थी और ये आते ही अपनी

वालिदा से रोटी मांगा करते थे। वह उनको बताती थी कि मुसल्ले पर खडे हो जाओ और दो रकात नमाज पढों और अल्लाह से मांगों और कहो कि अल्लाह मुझको भूख लगी है, खाना दे दो। खुवाजा बखतियार की वालिदा खाना कमरे में छिपा कर रख देती थी और कहती थी कि कमरे में जाओं और अपना खाना तलाश करों। उनको वहां खाना रखा हुआ मिल जाता था। रोजाना उनकी वालिदा का यही मामूल था। यह रोजाना मदरसे से आते और दो रकात नमाज पढते और अपना खाना अल्लाह से मांगा करते थे। इस अमल के वो आदि हो चुके थे और उनको यकीनें कामिल हो गया था कि खाना और सब चीजें अल्लाह ही देता है।

एक रोज इनकी वालिदा किसी काम से बाहर गई और खाना रखना भूल गई। जब उन्होने देखा कि बच्चे का मदरसे से आने का वक्त हो गया, तो ये जल्दी से घर वापस आयी तो उन्होने देखा कि उनका बच्चा सो रहा है। उनकी वालिदा ने जल्दी से खाना बनाया और कमरे में रख दिया और फिर अपने बच्चे को उठाया और कहा कि आज तो मेरे बच्चे को बहुत भूख लगी होगी। बच्चे ने कहा कि मेरा तो पेट भरा हुआ है। जब मैं मदरसे से आया था तो मैंने नमाज पढी और

अल्लाह से अपना खाना मांगा और कमरे में रखा हुआ खाना खा लिया। आज तो खाना बहुत ही मजेदार था। मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया। क्योंकि वो तो सोच रही थी कि आज बच्चे का यकीन टूट जायेगा। लेकिन अल्लाह ने इसका यकीन टूटने नहीं दिया।

इस तरह इल्लाह के यकीन पर इस बच्चे की तरबियत हुई। बडा होकर यह बच्चा बहुत बडा वली बना और खुवाजा कुतबुददीन बखतियार काकी के नाम से मशहूर हुए और बहुत लोगों ने इनसे फैज हासिल किया।

जब ये अपनी आखिरी उम्र को पहुॅचे तो कुछ बीमार रहने के बाद इनका इन्तकाल हो गया। इनके जनाजे में लाखों आदमी शामिल थे। उनमें उस वक्त का बादशाह अलतमिश भी शामिल था। जब जनाजा कब्रुस्तान में रखा गया तो एक आदमी ने ऐलान किया कि हजरत की वसीयत थी कि मेरे जनाजे की नमाज वो आदमी पढायेगा जो मेरी चार शर्ते पूरी कर देगा।

1. जिसकी जमात की नमाज तकबीरे ऊला के साथ कभी भी ना छुटी हो।
2. जिसकी तहज्जुद की नमाज कभी ना छुटी हो।
3. जिसकी बुरी नजर कभी भी किसी नामहरम पर ना पडी हो।

4. जिसकी असर की फर्ज नमाज से पहल की चार सुन्नतें ना छुटी हों।

ये शर्ते सुनकर पूरे मजमें में सन्नाटा छा गया। कोई भी आदमी मजमें से आगे नहीं बढा। कुछ देर के बाद बादशाह अलतमिश र0अ0 रोता हुआ आया और हजरत का मुंह खोलकर बोला कि आज आपने मेरा राज इस भरे मजमें में खुलवा दिया। उन्होने जनाजे की नमाज पढायी।

हजरत खुवाजा बखतियार काकी र0अ0 का मजार दिल्ली में कुतुबमीनार से कुछ दूरी पर बना हुआ है।

''हजरत बिलाल र0अ0''

आप इमान लाने वालों में हजरत अबुबकर के बाद आते है। आप साबिकूना अव्वलीन में से है। आप उमय्याबिन ख़लफ के गुलाम थे। आपको दो हजार दिनार और तीन गुलामों के बदले में हजरत अबुबकर र0अ0 ने उमय्या बिन ख़लफ से खरीदा था। आपके ऊपर अल्लाह पर ईमान लाने के बाद बहुत जुल्म हुये। ईमान लाने वालों में हजरत अम्मार भी थे। उन पर भी बहुत जुल्म होते थे। एक रोज उमय्याबिन ख़लफ हजरत अम्मार पर कोडे बरसा रहा था। उसने हजरत बिलाल को बुलाया, जो उसके फरमा बरदार गुलाम थे।

मगर चुपके से ईमान ले आये थे। उन से कहा कि अब मैं अम्मार पर कोडे मार मार कर थक गया हूॅ। अब तू इसकी खबर ले। क्योंकि बिलाल र0अ0 बहुत ताबेदार थे और उसके हुकमों को बहुत मानते थे। उसके हाथ से कोडा लिया और हजरत अम्मार के पास आये और उनसे कहने लगे कि अब तक तो तुम अकेले पिटने वाले थे। अब मैं भी शामिल हो गया और जोर जोर से कोडा घुमाया और उसको दूर फेक दिया। यह देखकर उमय्या उनके पास आया तो हजरत बिलाल ने जोर जोर से कलमा पढना शुरू कर दिया।

अश्हदो अल ला इलाहा इल्लाह व
अश्हदो अन्ना मुहम्मदुर रसूल अल्लाह

यह सुनकर उमय्या इबने ख़लफ को बहुत गुस्सा आया और कोडा उठा कर हजरत बिलाल की पिटाई शुरू कर दी। अब उन पर बहुत जुल्म होने लगे। उमय्या इबने ख़लफ इस्लाम और मुहम्मद स0अ0 व सल्लम के कट्टर दुश्मनों में से था। अब ये हजरत बिलाल को लोहे सरिये डाल कर मक्के की तपती रेत पर लिटा कर खींचा करता था और कोडे लगाया करता था। लोहे के सरिये धूप में तपकर बहुत गर्म हो जाते

थे। फिर तपती हुई रेत होती थी। जिस पर लिटा कर उनको खींचा जाता था। जिसकी वजह से उसकी कमर छिल जाया करती थी। लेकिन वह आहद आहद यानी अल्लाह एक है, अल्लाह एक है के नारे लगाते रहते थे। इन सख्तियों के बाद भी उन्होने यह नारे लगाने बन्द नहीं किये। एक रोज जब हजरत अबुबकर सिद्दीक उनके पास से गुजरे तो उनके ऊपर होते हुए जुल्म को देखकर रोने लगे और हजरत बिलाल से कहा कि तुम यह कलमा आहिस्ता आहिस्ता पढ लिया करो। जिससे तुम्हारे ऊपर होने वाले जुल्म शायद कुछ कम हो जाये। मगर हजरत बिलाल इस पर तैयार नहीं हुये और उसी तरह जुल्म सहते रहे। उनको मक्का की गलियों में घसीटा जाता था और आवारा बच्चों को इस काम पर लगा दिया जाता था।

एक रोज हजरत अब्बास जो अभी तक इस्लाम में दाखिल नहीं हुए थे। उनसे हजरत अबुबकर ने कहा कि तुम हजरत बिलाल को खरीद लो। मुझको तो यह जालिम नहीं बेचेगा। हजरत अब्बास ने उमय्या से कहा कि इस गुलाम को तुम मुझको दे दो। उसने इसकी कीमत पचास दिनार मांगी मगर बाद में देने से इन्कार कर दिया। फिर हजरत अबुबकर ने खुद उमय्या से

बात की तो उसने कहा कि इसकी कीमत 2 हजार दिनार और तीन गुलाम है। हजरत अबुबकर ने इनको खरीद लिया। हजरत मुहम्मद स0अ0 सल्लम इनके हालात जब सुनते थे तो काबे शरीफ में बैठ कर रोया करते थे। हजरत अबुबकर का इसका बहुत रंज था। इसलिए ही उन्होने इतनी बडी कीमत देकर हजरत बिलाल को खरीदा था। खरीदने के बाद हजरत अबुबकर हजरत बिलाल को अपने घर ले गये और इनको जख्मों को मरहम पट्टी की और नहला कर नये कपडे पहनाये, बालों में तेल लगाया और हुजूर स0अ0 व सल्लम के पास ले गये और समझाया कि वहां पर जाकर आपको रोना नहीं है। जब हजरत बिलाल को हजरत अबुबकर हुजूर स0अ0 व सल्लम के पास ले गये, तो आप बहुत खुश हुये और हजरत अबुबकर को गले लगा लिया और राये।

हजरत बिलाल ने कहा कि मैं काम करने का आदि हूँ। मैं क्या करूंगा? आप स0अ0 सल्लम ने कहा कि तुम मेरे पास रहोगे और मेरे घर के सब काम करोगे। हजरत बिलाल ने कहा कि आप मुझको एक नेजा बनवा दो। मैं आपकी हिफाजत के लिए उसको अपने पास रखा करूंगा। उनको नेजा दे दिया गया।

एक रोज हुजूर स0अ0 सल्लम ने हजरत बिलाल को हुकुम दिया कि तुम अब मदीने चले जाओ। कुछ दिन के बाद मैं भी मदीने जाऊंगा। आपने पन्द्रह आदमियों का अमीर बनाकर हजरत बिलाल को मदीने रवाना कर दिया। हजरत बिलाल रोज मदीने के बाहर जाकर हुजूर स0अ0 व सल्लम का इन्तजार किया करते थे। कुछ दिन बाद आप स0अ0 व सल्लम भी मदीने पहॅुच गये और वहां पर मस्जिदे कुबा की तामीर शुरू कर दी। हजरत बिलाल ने मस्जिद बनवाने में बहुत काम किया और मस्जिद तैयार हो गई। शुरू में मस्जिद के मीनार पर आग जलाकर लोगों को नमाज के लिए बुलाया जाता था। उसके बाद एक सहाबी ने और हजरत उमर ने पूरी आजान ख्वाब में याद की और हुजूर को आकर सुनाई। हुजूर स0अ0 व सल्लम ने आजान हजरत बिलाल को याद कराई। क्योंकि इनकी आवाज बहुत तेज थी। इस तरह पहली आजान मदीने में हजरत बिलाल ने दी। हुजूर की जिंदगी में दो बार ऐसा हुआ कि हजरत बिलाल ने फजर की आजान नहीं दी। एक रोज वह कहीं चले गये थे और एक दिन जब एक जंग के दौरान हुजूर स0अ0 व सल्लम भी किसी सफर में साथ थे। सबको नींद आ गयी। हुजूर स0अ0

सल्लम की भी आंख नहीं खुली और सूरज निकलने के बाद सुबह की आजान देकर नमाज पढी गई।

''अस्सलातो खैरूममैन्नोम''

रोजाना आजान फजर के बाद हजरत बिलाल हुजूर स0अ0 व सल्लम को आवाज देने जाया करते थे। एक रोज हजरत बिलाल ने आवाज दी तो हुजूर स0अ0 व सल्लम बहुत देर तक बाहर नहीं आये तो हजरत बिलाल ने अस्सलातो खैरूममैन्ननोम की सदा लगाई। उसके बाद आप स0अ0 व सल्लम मुस्कुराते हुये बाहर आये और उसके बाद आपने आजान में अस्सलातो खैरूममैन्ननोम पढने का हुकुम दिया। उस वक्त से आज तक फजर की आजान में ''अस्सलातो खैरूममैन्ननोम'' पढा जाता है।

Quotation- कौन कहता है कि खुदा नजर नहीं आता। मैंने देखा है, उसको मेरे गुनाहों की परदादारी करते हुए। मैंने देखा है, उसको अपनी दुआएं कबूल करते हुए। मैंने देखा है, उसको मुझ बे वसीला के वसीले बनाते हुए, जो मेरे गुमान में भी ना थे। मैंने देखा है उसको अपनी ना शुक्री करते हुए भी रिज़क देते हुए। मैंने देखा है उसको मुश्किलों में मेरा हौसला बढाते हुए।